ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥

नयनसुखदास रचित—

॥ जैन भजन संग्रह ॥

मंगलाचरण ।

दोहा—ज्ञानानंद अनंत शिव, अर्हन मंगल मूल ।
कलिल कुलाचल तोड़कर, हरोनाथ भवशूल ॥
तुम शिव मगनेतार हो, भेत्ता कर्म पहार ।
विश्व तत्व ज्ञाता परम, लो स्तुति येग हमार ॥
तुम त्रिभुवन के भानु हो, मैं खद्योत समान ।
कैसे तुम गुण वर्णऊं, अल्प मतिन की बान ॥
हृदय भक्ति प्रेरक भई, चलकर पकरे कान ।
ला पटक्यो पदकमल बिच, सकल जगत गुरुजान ॥
तुम अनंत गुण आगरे, पटतर अवरन कोय ।
तुम वाणी तैं जानिये, जो कछु जग में होय ॥
भूत भविष्यत कालकी, षट द्रव्यन पर जाय ।
वर्तमान सम तुम लखो, हस्तामलक सुभाय ॥
सकल चराचरजगतथित, ज्ञान मुकररही सूझ ।
तातैं तुम अर्हंत हो, सकल जगत करि पूज ॥

तुमतैं गणधरनै सुन्यो, चहुँ गति मय सार।
तातैं तुम हो परम गुरु, पतित उधारन हार॥
वीतराग सर्वज्ञ तुम, तारण तरण महान।
तातैं तुमरे वचन प्रभु, हैं षट् मत परवान॥

धरम अहिंसा तुम कह्यो, जहँ हिंसा तहँ पाप।
दयावंत भवजल तिरैं, पापी जग संताप॥
जीव दया गुण वेलड़ी, बोई ऋषभ जिनेश।
षट्दर्शन मंडप चढ़ी, सींची भरत नृपेश॥

मिथ्या वचन अनादरे, तुमने हे जग संत।
तातैं झूठन की झरत, जहां तहां सिर रेत॥
सत्य धर्म तैं होत है, त्रिभुवन में परतीत।
सततैं गोला लोहका, होय तुषार प्रतीत॥

चोरी तुम वर्जनकरी, परम पाप लख धीर।
त्यागी पद पद पूजिये, चोर सहैं बहुपीर॥

अनाचार वर्जन कियो, ग्रहणकरणकह्योशील।
जिन धारी सो जग तरे, जिन छाड़ो कढीकील॥

शील शिरोमणिजगतमें, यासम धर्म न और।
अग्निहोय जल परणवे, विष हो अमृत कोर॥
खड्गमालह्वै परण वे, सूल सेज मखतूल।
आधिव्याधि आवे नहीं, शीलवंत ढिगमूल॥

भव तृष्णा दुख दायनी, भाषी तुम भगवान।
त्यागी त्रिभवनपतिभये, रागी नर्क निदान॥
देवधर्म गुरु हो तुम्ही, ज्ञान ज्ञेय ज्ञातार।
ध्यान ध्येय ध्याता तुम्ही, हेया हेय विचार॥

कारण हो शिव पंथ के, उद्धारण जग कूप ।
कारज सारन जीव के, हो तुमही शिव भूप ॥
उत्तम जन बहु जगतसैं, तारे तुम भगवान ।
अधम न तारो एक मैं, तारो है जग जान ॥

आयो तुम पद पूजने, भजन करन के चाव ।
राखो सब २ भजन में, जब लग जग भगमाव ॥
भजन करत संसारसुख, भजन करतनिर्वान ।
भजन बिना नर जगतमें, है तिर्जंच समान ॥

भजन करत जग उद्धरे, सिंह नवल कपि सूर ।
गण धरहो वृष भेश के, मुक्ति भये अघचूर ॥
निर अंजन अंजन भये, गज किरातभये सिद्ध ।
स्वान जटी पन्नगनिरे, तिनकी कथा प्रसिद्ध ॥

कहां पशूपर जायनर, कहां मुक्ति को धाम ।
तू भी मूरख भजनकर, मुख में भलो न चाम ॥
या जग विषम विदेशमें, बंधु भजन भगवान ।
सार्थ वाह निर्वृत्तिको, लखि निश्चयउरआन ॥

भजनबाद जिनभक्ति बिन, भक्तिबाद बिननाव ।
भाव बाद अवगाढ़ बिन, गाढ़ बाद बिन चाव ॥
धन्य महूरत धन घड़ी, धन्य दिवस गिनआज ।
तरस तरस कारण जुड़ो, श्रीजिनभजनसमाज ॥

रहो सदा ऐसो सुखी, रहो सदा सत् संग ।
जातें श्रीजिन भजन में, प्रति दिन होय उमंग ॥
धन्य पुरुष सज्जन मिले, भये सहायक धर्म ।
भजन करूं भगवंत का, राख सरस्वति सर्म ॥

तू कैवल्य उद्योत की, परम ज्योति तमहार।
नयनानंद गरीब की, यह विनती उरधार॥

मोह महातम दूर कर, शुद्ध ज्ञान परकाश।
ज्यों अब सांचे देव का, गाऊं भजन विलास॥
यह विधि मंगल मानकैं, कहूँ भजन दो चार।
भाषूं नयना नंद के, कृत विलास अनुसार॥

धुरपद।

१—चाल धुरपद (२४ तीर्थंकर के नाम)

ऋषभोजित संभवंद, अभिनंदन सुमतिकंद पद्मप्रभपादवंद, भगवत गुणगावरे॥ टेक॥ सेवो शुभपास संत, चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस कंत, सीधेमन ध्यावरे॥१॥ वासवनुत वासपूज, भजिकर निर्मूल अरूज भागे अघ अनन्त धूज, सद्धर्म प्रभावरे॥२॥ धरले मनशांति कुंथु, परले अरमल्लिपंथ वरले सुवृत समंत नमि नेमीश पावरे॥३॥ करले पारससें भेट सन्मति गहि भर्म मेट वीत्यो चिरकाल क्यों न, उन्झा सुरझावरे॥४॥

२—चालधुरपद (तीर्थंकरों के पिता के नाम)

वंदूं जगनाथ तात, नाभिरु जितशत्रुनाथ। धार कै जुग हाथ माथ, धन धन वलधारी॥ टेक॥ जयतार सुवीरमेघ, धारण सुप्रतिष्ठ नेघ। महसेन सुकंठ वेग दृढरथ सुखकारी॥१॥ विमलेश्वर वासुदेव, जयनृप सिंधसेन एव। भावन विसुसेन सेव, सूरज दुखहारी॥२॥ सुन्दर दर्शन नरेश, कुंभरु श्रीसमंतेश। विजयो-

जय जलनिधेश, पुन्यातम भारी ॥३॥ भजरेमन अश्वसेन, सिद्धा-रथ सिद्धदेन । ये जिन चौवीस तात, एका भवतारी ॥४॥

३—चालधुरपद (तीर्थंकरों की माता के नाम)

सुनरेमन मेरी बात, आपजिन जगत तात। ऐसी जिन मात ताहि, वंदन नित करनी ॥ टेक ॥ मरुदे विजया मतीय, श्रीयुत-षेणा सतीय। सिध्रअर्था मंगलीय सीमा सुखभरणी ॥१॥ पृथवी शुभलक्षणीय, रामारु सुनंदनीय। विमला जयदेवि रमा, सूर्या दुखहरणी ॥२॥ सुभव्रतधरणी सतीय, एला अरुश्रीमतीय। मित्रा सारस्वतीय, श्यामा भवतरणी ॥३॥ विशिपा शित्र देवि माय, वामा त्रिशलादि ध्याय। वंदूं वह कोप जगत, चूड़ामणि धरणी ॥४॥

४—चालधुरपद (तीर्थंकरों के सोलह जन्म नगर)

कौशल सावत्थि ग्राम, काशी कोशां विठाम। तीर्थंकर जन्म ग्राम, तीरथ कर प्यारे ॥ टेक ॥ चंपापुर चंद्रपुर भद्दलपुर, सिंहपुर। मिथुलापुर रत्नपुर गजपुर नितजारे ॥१॥ काकंदी कंपिलादि. सूरजपुर राखयाद। जाकरकुपअग्रपूर मुनिसव्रतप्यारे ॥२॥ कुंडलपुर वीरदेव, पोडश हैं नगर एव। जन्मे भगवंत जहां आप सुरसारे ॥३॥ घर घर भई रत्न वृष्टि, धर्मातम भई सृष्टि सोभा वरनी न जाय, नरभव फलपारे ॥४॥

५—चालधुरपद (तीर्थंकरों के चरण चिह्न)

भाष् जिन चरण चिह्न, प्रभु के तनतैं अभिन्न। सुनकै चित हो प्रसन्न, संशय सब टारिये ॥ टेक ॥ वृष गज घोटक कपीश,

क्रौंचरु अंभोजदीश। स्वस्तिक निशईश मच्छ, श्रीवत्स विचारिये ॥१॥ पंगपग महिषा वराह, वाजरु वज्रायुधाह। मृग थोक धनुगिनाह, कलश। उरधारिये ॥२॥ कच्छप अरुकमलशंप, सर्परु केहरिनिशंक। लखिकै जिन अंक नाम, निश्चय चित पाड़िये ॥३॥ धरिये उर ध्यान देव, करिये प्रभु चरण सेव। जातैं भव सिंधु खेव, शिवमें ले तारिये ॥४॥

६—चालधुरपद (गुरु नमस्कार)

वंदू निर्ग्रंथसाधु, त्यागी जिनगज उपाधि। आतम अनुभव अराधि, परपरणतिछारी ॥ टेक ॥ तजि तजि पदचक्रवर्ति, मन बचत न हो निवर्त। पायन पृथिवी विचर्त, जिन दिक्षा धारी ॥१॥ सम दम संवरसंभार, निर्जर कर कर्मटार। पट तन प्राणी उवार, करुणा विस्तारी ॥ जीते त्रय शल्यदल, सुर गि रसम भये अचल। रत्नत्रय धरणमल्ल, कष्ट सहैं भारी ॥३॥ जय जय महमा निधान, जंगम तीरथ समान। मेरे उर वसो आन, वंदू जगता-री ॥४॥

७—चालधुरपद [जिन वाणी नमस्कार]

निकसी गिरवर्द्धमान, सेती गंगा समान। गोतम मुखपरी आन, सारद जगमाता ॥ टेक ॥ तारेत भ्रमगज सुदंत, जड़ता तपकरि प्रशंत। रत्नाकर ज्ञान अंत, पहुँचो भवत्राता ॥१॥ जामैं सप्तांगभंग, उठैं निर्मल तरंग। अमृत को कोर मोख, मारग की दाता ॥२॥ आदिरु मध्यावसान, निर्मल किरपा निधान। धारा पर वाह वान, त्रिभवन विख्याता ॥३॥ वंदै दग सुक्खदास, मेरे उर कर निवास। गाऊं जिनगुण विलास, कीजै सुख साता ॥४॥

८—चाल धुरपद [रत्नत्रय धर्म को नमस्कार]

/ लागरे तू मोक्ष मग्ग, रत्नत्रय मांहि पग्ग। मोरै मतनाहि डग्ग, पहुँचै शिव धामरे ॥ टेक ॥ सम्यक् मई दृष्टिठान, हित अरु अनहित पिछान। संशय भ्रमभान ज्ञान, चिंतामणि थामरे ॥१॥ पूंजी परभवकी जान, सम्यक् चारित्र आन। टूटैं अघजाल मुक्ति, पावै बिन दामरे ॥ २ ॥ तन धन आशा विहाय, कृषकर काया कषाय। कोई न करि हैं सहाय, जबहूँ अवलामरे ॥३॥ नैनानंद कहत मीत, भाषी सतगुरुनै नीत। बोवै बबूल तौ न, लागैंगे आमरे ॥४॥

९ - चालधुरपद [१६ कारण भावना]

/ भारे दर्शन विशुद्ध, तजकर परणति विरुद्ध। प्रवचन वत्स लसुबुद्ध, आदिक वंल फुरकै ॥ टेक ॥ तीर्थंकर प्रकृतसार, ताकी यह देनहार। आराधन गुन संभार, अपनी उर दुरकै ॥१॥ जिन पद अरिविदसेय, सतगुरकी सरण लेय ॥ आगम मैं चित्त देय, टूटैं अघचुरिकै ॥२॥ आगे कुछ सिद्ध नाहिं दोनों भव विगड़ जाय भरमैं गो फेर २ रो गे झुर झुर कै ॥३॥ भरमों चहुँगति मंझार, नैनानंद सुनले यार। कुविसन की देवटार, भागै मति दुरिकै ॥४॥

१०—चाल धुरपद (पंचपरमेष्टि नमस्कार)

/ ० चेतरे अचेत मीत लीनों चिरकाल वीत तजकै परमाद रीति अबतो तू जागरे ॥ टेक ॥ भजले पर ब्रह्मरुप अर्हन सर्वज्ञभूप सिद्धन के गुण अनूप चितवन मैं लागरे ॥ १ ॥ आचारज अरु-

उवज्झाय, साधुन पदशीसनाय, पैंडोक्षुड़वाय, दुष्ट विषयन सूं भागरे ॥ २ ॥ हिंसा अरु झूठ नाख मत कर चोरी भिलाख मैथुन सिर डार खाक तृष्णा जग त्यागरे ॥ ३ ॥ पांचों पद ध्याय पंच पापतैं पलाय अब पूरी कर नींद नाहीं खावैंगे कागरे ॥ ४ ॥

११–चाल धुरपद (संसार व्यवस्था)

देखरे अज्ञान भौन तेरो जगमांहि कौन कीने सब स्वांग तौन तो मन अपकायो ॥ टेक ॥ लेयकै निगोदकाय पृथिवी अप तेजबाय तरवर चरथिर भ्रमाय चहुँगति भरिआओ ॥ १ ॥ सुरनर पशुनर्कथान कबहुक विचरयो विमान कबहुक नरपति प्रधान लटक्रम कहलायो ॥ २ ॥ कबहुक बन्धखम्भलाल तन की उचराय खाल कबहुक चण्डाल अभक्ष भक्षण को धायो ॥ ३ ॥ अंबतोनर चेत चेत विपयन सिर डार रेत पौरुप परकाश तू है सिंहनि को जायो ॥ ४ ॥

१२–चाल धुरपद (सम्यक्त महिमा)

वंदूं समकित निधान जिन पति के नन्दजान नन्दनवनकी समान सबकूं सुखकारी ॥ टेक ॥ जिनके घट माहिराज उमड्यो घनज्ञान गाज समरस भई वृष्टि सृष्टि तृष्णा सब टारी ॥ १ ॥ अनभव अंकूर फूट शंसय गुठली प्रटूट चारितरुचि ब्रह्मभाव शाखा विस्तारी ॥ २ ॥ सुव्रत पुष्पोन्मीत करकै जिन वच प्रतीत शिवफल मैं धारनीत परपरणति छारी ॥ ३ ॥ करुणा छाया, पसार भोगी जोगी अपार ठाडे भव वन मझार निर्भय अविकारी ॥ ४ ॥

१३—चाल धुरपद ।

वंकोन मझोल गोल, कर्मन केहैं झकोल । मेरी महिमा अडोल चेतन अविनाशी ॥ टेक ॥ लघुगुरु मम रूप नांहि मृदु कठिन सरूप नांहि हिम उष्णरूप नांहि रुखन चिकनासी ॥ १ ॥ षट्रस अनमिष्ट खार चर्चरन कषाय सार कटुकन दुर्गन्ध गन्ध श्याम न पीतासी ॥ २ ॥ हरि तन आरक्त श्वेत धूपन तम ज्योति देत शब्दन सुरनर परेत नर्क न वन वासी ॥ ३ ॥ जल थल बिलनभ चरांन त्रिय पुन्स न पुन्स कौन धनवन्त न रङ्क हीन सम्यक् करिभासी ॥ ४ ॥

१४—चाल धुरपद ।

धर्मी न अधर्म पाल अनमें आकाश काल पुग्दल सें भिन्न एक चेतन चित्लारी ॥ १ ॥ परजयगति थिति धरंत त्रिभुवन नभ में भ्रमंत त्रिपणी मोहि सब कहंत त्रयधा तपधारी ॥ २ ॥ भूजल अनतेजवाय दोविधि तर वर न काय विकलत्रय रूप नांहि इंद्रिय सब न्यारी ॥ ३ ॥ सब सें अनमेल खेल जैसें तिल मांहि तेल पावक पाषाण जेम हमरी विधिन्यारी । ऐसें विज्ञान भानु दगसुख महिमा निधान तिनकूं जुग जोरि पान वंदन विस्तारी ॥ ५ ॥

१५—शूलताल ।

आत्म दरबको भेद न पायो, परपरणनिकर, यह नर जन्म गंवायो ॥ टेक ॥ भरम भगल वस, पंच दरब फंसि. नटवत नवरस, कर्म नचायो ॥ १ ॥ सपरस रस अरु गंध वरण स्वर,

इनते पर निज, क्यों न लखायो ॥ २ ॥ वन्हि अगिनि ज्यों, दधि में घृत त्यों, किम तिल तेल, जतन विन पायो ॥ ३ ॥ तजि परपञ्चन, माटी कञ्चनं, ढूंढि निरंजन, सतगुरु गायो ॥ ४ ॥ दृगसुखसिंधन, दाहनिकंदन, शूलताल करि ज्ञान सुनायो ॥ ५ ॥

१६—रागधनाश्री ताल तैलंगी।

अरे नर तनको मोह न कर रे, तू चेतन यह जर रे ॥ टेक ॥
सपरस पोपि विषय कूं चाहै सो मोरी रही सर रे ॥ १ ॥
रसना क्या न भखो या जग में सब पुग्दल लियेचर रे ॥ २ ॥
नांक फांक मत फूल घुसे रे रही सिनक सूं भर रे ॥ ३ ॥
जिन आंखन पर गोरानिरखै सो ढीढों रही झर रे ॥ ४ ॥
धर्म कथा सुन मोक्ष न चाहे तो यह कान कतर रे ॥ ५ ॥
तू निरञ्जन है भयभञ्जन तन कठिन को घर रे ॥ ६ ॥
दधिवत् मथि पट माल निरालो भापत हैं सत गुरु रे ॥ ७ ॥
दृगसुख होय निजातम दर्शन भवसागर सूं तर रे ॥ ८ ॥

१७—राग दादरा।

करै जीव का कल्याण, सदा जैन वानी रे, जैनवानी जैनवानी जैन वानी रे, करै जीव का कल्याण ॥ टेक ॥ संशयादि दोषहरै, मोहकूं निर्मूल करै, तोषदाय नन्दन, वन समानी रे ॥ १ ॥ कर्म-जाल भेदनी, है भर्म की उछेदनी, वस्तु के स्वरूप की है लाभ दानी रे ॥ २ ॥ वस्तु कूं विचार जीव, पार होत हैं सदीव, केवलादि ज्ञान की, कलानिधानी रे ॥ ३ ॥ नैन सुक्ख अन्तकाल, में करै सवै निहाल, नाग वाघ स्वान किये स्वर्ग थानी रे ॥ ४ ॥

चौबीस तीर्थंकरों के भजन

१८—राग कालङ्गड़ा (श्री ऋषभजनाथ)

/०अबतो सखी दिन नीके आये, आदीश्वर लीनो अवतार ॥टेक॥
सरवारथ सिद्धितैं चय आये, मरुदेवी माता उरधार ।
नाभि नृपति घर बटत वधाई, आज अयोध्यानगर मझार ॥ १ ॥
सुखम दुखम में तीन वरष, अरु शेष रहे वसुमास अवार ।
अबतो जाग जाग मोरी आली, हिल मिल गावैं मंगलचार ॥ २ ॥
पुण्य उदयते नर भवपायो, अरु पायो उत्तम कुलसार ।
धर्म तीर्थ करता गुरु पायो, अब कटि हैं सब कर्म विकार ॥ ३ ॥
स्वयंबुद्ध पूरण परमेश्वर, मोक्ष पंथ दर्सावन हार ।
नयनसुख्य मन वचन कायकरि, नमूं नमूंवसु अङ्ग पसार ॥ ४ ॥

१९—रागनी भैरवीं (श्रीअजितनाथ)

अजित कथा सुनि हर्ष भयोरी ॥ टेक ॥
विजयविमान त्याग के प्रभुजी, जेठ अमावस आनिचयोरी ।
माघ सुदी दशमी नवमी कूं. जनम तथा जग त्याग कियोरी ॥१॥
जित रिपु तोन मात विजयादे, नगर अयोध्या दरस दियोरी ।
जाके चरण चिह्न गजपति को, ढौंच शतक तन तुङ्ग थयोरी ॥२॥
लाख वहत्तर पूरबआयू , इन्द्र ने पांच उछाव कियोरी ।
पोष शुक्ल एकादशि अवसर, सकल चराचर बोध भयोरी ॥ ३ ॥
मधुसित पांचैं कूं शिवपाई, भवि अनन्त उद्धार कियोरी ।
दृगसुख तीन काल तिहुँजग में, सो जिनवर जैवन्त जयोरी ॥ ४ ॥

२०—राग विलावल (श्रीसंभवनाथ)

सभवनाथ हरो मम आरत, आ पकड़े प्रभु चरण तुम्हारे ॥ टेक ॥
तुम विन कौन हरै मम पातक, तुम विन कौन सहाय हमारे ।
धनुषच्यार शत मूरति तुमरी, निरखत उपजत हरष अपारे ॥
सुनियत जन्मपुरी सावस्ती, सुनयत घोटक चिह्न तुम्हारे ।
पिता जितारथ सेना माता, साठलाख पूरव थिति धारे ॥ २ ॥
ऊरध ग्रीवकतैं चय आये, तुम जग जाल बिदारन हारे ।
हगसुख देखि दिगम्बर तुमको, और लगें सब देव ठगारे ॥ ३ ॥

२१—रागनी टोड़ी (श्रीअभिनन्दननाथ)

जै जै जै संवर नृपनन्दन अभिनन्दन नृप जगत अधार ॥ टेक ॥
विजै विमान त्यागि तुम आये, सिधअर्था के गर्भ मझार ।
जन्मे माघ सुदी द्वादशि को, नगर अयोध्या सुखदातार ॥ १ ॥
जिस दिन जन्म उसी दिन दिक्षा, ज्ञान पौषवदि चौथ अपार ।
भये सिद्ध वैशाख सुदी छठ, पूरव लाख पचास उमार ॥ २ ॥
धनुष तीनसै साढे काया, स्वर्ण वर्ण कपि चिह्न तुम्हारे ।
तुम इक्ष्वाकुवंशके भूषण, सुरनर गावत सुजस अपार ॥ ३ ॥
नैनानन्द भयो अब मेरे, देख दिगम्बर मुद्रासार ।
सुन सुन बचन विगतमल तुमरे, दीने कुगुरु कुदेव विसार ॥ ४ ॥

२२—रागनी जोगिया असावरी [श्रीसुमतिनाथ]

..नि रे ॥ २ ॥ वस्तु कूं विचार जाव, पार होत हैं ..न हारे ॥ टेक ॥
..लादि ज्ञान को, कलानिधानो रे ॥ ३ ॥ नैन सुक्ख
..करै सबै निहाल, नाग वाघ स्वान किये स्वर्ग १ ॥

धनुष तीनसै तुङ्ग प्रभु तुम, सब भव भोग विसारे ।
कर्मघातिया तोड़ छिनक में, लोकालोक निहारे ॥ २ ॥
विश्वतत्त्व ज्ञायक जगनायक, जीव अनन्त उबारे ।
बिन कारण भ्राता जगत्राता, हमसुख शरण तिहारे ॥ ३ ॥

२३—राग भैरुंनर [श्रीपद्मप्रभु]

वन्दन कूं प्रभु वन्दन कूं हम आये हैं, पद्म प्रभु वन्दन कूं ।टेक ॥
जन्म लियो कोशाम्बी नगरी, भविजन पाप निकन्दन कूं ॥ १ ॥
मात सुसीमा गोद खिलाये, पूजूं धारण नन्दन कूं ॥ २ ॥
वन्श इक्ष्वाकु कृतारथ कीनो, दूर किये दुखद्वन्दन कूं ॥ ३ ॥
नयनानन्द कहैं सुनि स्वामी, काटि मेरे भव फन्दन कूं ॥ ४ ॥

२४—रागसारङ्ग (श्रीसुपार्श्वनाथ)

देव सुपारस ध्याइये, अरे मन देव सुपारस ध्याइये ॥ टेक ॥
भव आताप निवारण कारण, घसि घनसार चढाइये ॥ १
अक्षत ले प्रभु चरण चढावो, तुरत अखय पद पाइये ॥ २ ॥
भरि पुष्पांजली पूजन कीजै, मद कन्दर्प नसाइये ॥ ३ ॥
अपनी क्षुधा हरण के कारण, उत्तम चरु अरचाइये ॥ ४ ॥
नाशे मोह महा तम भारी, दीपक ज्योति जगाइये ॥ ५ ॥
करमबन्श विध्वन्स करन को, धूप दशांग जराइये ॥ ६ ॥
फलते फल शिव पद को पावै, नयनानन्द गुणगाइये ॥ ७ ॥

२५—राग पीलू-पंजाबी ठुमरी [श्रीचंद्रप्रभु]

दिल लागा मेरावे, भलादिल लागा मेरावे, श्रीचंदाप्रभुदेनाले ॥ टेक ॥
भव अनन्त उद्धार कियो तुम, ऐसे दीन दयाले ॥ १ ॥

जाके वचन सुनत भय भागे, टूट पड़ें अघजालं ॥ २ ॥
दरस देखि मेरे नैन सुफल भये, चरण परसि कें भालं ॥ ३ ॥
गुण सुमरत भयो जनम सफल अरु, पुण्य कलपतरुडालं ॥ ४ ॥
कहत नैनसुख भवसागर सें हे प्रभु वेग निकालं ॥ ५ ॥

२६—राग झंझोटी [श्री शीतलनाथ]

हे परसिकै मूरति शीतल की मेरा शीतल भयो शरीर ॥ टेक ॥
परमानन्द घटा उर छाई, वरसे आनन्द नीर ॥ १ ॥
भागी जनम जनम की मेरी, भव तृष्णा की पीर ॥ २ ॥
मुद्राशांति निरखि भयभागे, ज्यों घन लगत समीर ॥ ३ ॥
दास नैनसुख यह वर मांगे, हरो नाथ भव पीर ॥ ४ ॥

२७—रागबरवा [श्री पुष्पदंत]

गाओरी अनंद वधाई मोरी आली. पुष्पदंत जिन जन्मलियो है। टे.
काकन्दीपुर वामादेउर, वैजयंत से आन चयो है ॥ १ ॥
वन्श इक्ष्वाकु सफल कियो जाने, कुल सुग्रीव कृतार्थ भयो है ॥ २ ॥
सकल सुरासुर पूजन आये, सुरगिरि पै अभिषेक कियो है ॥ ३ ॥
नैनानन्द धन धन वे प्राणी, जिन प्रभु भक्ति सुधार सुपियो है ॥४॥

२८—रागनी झंझोटी [श्रीश्रेयांसनाथ]

श्रीश्रेयाँसजिनेश्वर नें सखि, सकल कर्मदल हरे हरे ॥ टेक ॥
सजिसंयम सन्नाह महाभट, धीर धरा पग धरे धरे ॥
क्षमा ढाल समभाव खड्ग ले, अष्टकर्म संग अरे अरे ॥ १ ॥

देखि अनन्त बली जगनायक, चारों घातक टरे टरे ॥
चार अघातक शक्ति विना विन, मारे आपही मरे मरे ॥ २ ॥
निज अनुभूति परी पर हाथन, ताकारन नखि लरे लरे ॥
तब आइ अपने करमें तब, सकल मनोरथ सरे सरे ॥ ३ ॥
जै जै कार भयो त्रिभुवन में, इन्द्रादिक पग परे परे ॥
नैनानन्द मन वचन कायसूं, हित कर वन्दन करे करे ॥ ४ ॥

२९—राग जङ्गला-ठुमरी [श्रीवासुपूज्य]

पूजत क्यों नहिंरे मतिमंद, वासपूज्य जिनपद अरविंद ॥ टेक ॥

बाल ब्रह्मचारी भवतारी, परम दिगम्बर मुद्रा धारी।
दुविधि परिग्रह संगतजोजिन, गुण अनन्त सुख संपतसिंधु ॥१॥
ध्याता ध्येयं ध्यान विभाशी, ज्ञाता ज्ञेयं ज्ञान प्रकाशी।
पापातिक विमुक्तमलोयं, तारण तरण सहज निरद्वन्द ॥ २ ॥
महीमा वर्णत गणधर हारे, वचन अगोचर हैं गुणसारे।
परसत सात जनम लखदरसे, भामंडल अतिशय अचलंन ॥ ३ ॥
प्रातिहार्य वसुमङ्गल दर्वं, सेवत सुर नर मुनि गण सर्वं।
पांचवार जाहि पूजन आये, चंपापुर सुर इन्द्र फनेंद्र ॥ ४ ॥
वासदेव कुल चंद्र उजागर, जयो जयावति सुत गुण नागर।
दगसुख वीतराग लखि तुमकूं, आये शरण काटि भवफंद ॥५॥

३०—रागनी धनाश्री (विमलनाथ)

अब मोहि विमल करो, हे विमल जिन अबमोहि विमलकरो। टेक

धर्म सुधारस प्याल जगत गुरु, विषय कलंक हरो।
वीतरागता भाव प्रकाशो, शिव मग माहिं धरो ॥ १ ॥

तुम सेवा का यह फल चाहूं, क्रोध कपाय हरो।
माया मान लोभ की परणति, ये जग जाल जरो ॥ २ ॥
जब लग जगत भ्रमण नहीं छूटे, ऐसी टेव परो।
सच्चे देव धरम गुरु सेऊं, नयनानन्द भरो ॥ ३ ॥

३१—रागनी धानीगौरी के ज़िले में ग़ज़ल के तौर पर
[श्री अनंतनाथ]

स्वामी अनंत नाथ चरनों के तेरे चेरे हैं ॥ टेक ॥
सेवा करी न तेरी तकसीर है यह मेरी जी।
तुमको नहीं हैं चाह पापों ने हमको घेरे हैं ॥ १ ॥
विभ्रम मुझे जो आया, संशय ने फिर भ्रमायाजी।
पकड़ी करम ने बांह ले झारवें से गेरे हैं ॥ २ ॥
करता हूँ तेरी आसा, मेटो जगतका वासाजी।
तुमहो त्रिलोकसाह, संजम के भाव मेरे हैं ॥ ३ ॥
चरणों में राख लीजे, आनंद नैन दीजे जी।
अब तो बता दे राह, जैसे हैं तैसे तेरे हैं ॥ ४ ॥

३२—राग श्यामकल्याण [श्रीधर्मनाथ]

तारधनी अबमोहि जगत से तारधनी, अब मोहि जगतसे ॥टेक॥
भटकत भटकत भवसागर में, भोगी त्रिविधि विपत्ति घनी ॥ १ ॥
लख चौरासी जो दुख देखे, सो बिपदा नहीं जाय गिनी ॥ २ ॥
धरमनाथ प्रभु नाम तिहारो, धरम करो मोपै आन बनी ॥ ३ ॥
करि उद्धार निकारि जगत् से, दगसुख भक्ति विधान भनी ॥ ४ ॥

३३—रागनी खम्माच की ठुमरी [श्रीशान्तिनाथ]

हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे, हो विघन गये भजिकें प्रभू के पद ब्रजि कें, हमारी प्रभु शांति से लगन लागी रे ॥ टेक जीव अजीव सकल दरवनि की, जी बखानी गुण परजै, अनघ धुनि गरजै ॥१॥ सब भाषा मय वचन प्रभु के, जी सभी के मन भावैं। भरम विन सावैं ॥२॥ विन कारण जग जंतु उभारे जी, नयनसुखदाता, सभी के जग त्राताजी ॥

३४—खम्माच की ठुमरी (श्रीकुंथुनाथ)

आज आली श्रीमती जननि सुत जायोरी। आज आली। टेक।
सोम वंश हथनापुर नगरी, सूरज नृप सुख पायोरी ॥ १ ॥
लख योजन गज सजिकें सुरपति, उत्सवकूं उमगायोरी ॥ २ ॥
पांडुक वन सिंहासन ऊपर, क्षीरो दधि जल न्हायोरी ॥ ३ ॥
कुंथु कुंथु कहि संस्तुति कीनी, तांडवनृत्य करायोरी ॥ ४ ॥
सखियनमिलिजिन मंगल गाये, मोतियनचौक पुरायोरी ॥ ५ ॥
सौंपि पिता जननी गयो सुरपति, नैनानंद गुण गायोरी ॥ ६ ॥

३५—रागदेश (श्रीअरहनाथ)

तुम सुनोरी सुहागन चतुरनार, अरहनाथ प्रभुभये वैरागी। टेक।
सखि लख चौरासी गयंद तजे, जो कंचन मोतियन माल सजे।
तजिघोटक ठाराकोड़ि सखी, अरु छयानवै सहस्र त्रिया त्यागी ॥१॥
सखि चौदह रतन विसार दिये, अरु पंच महाव्रत धारि लिये।
तजि वस्त्र अभूषण जोग लिये, भये परम धरम से अनुरागी ॥२॥

सखि निरखि निरखि पग गमनकियो, समनाथरिकर्मविपोकसह्यो
चलो परम पुरुष के वंदन कूं. अब केवल ज्ञान कला जागी ॥३॥
हथनापुर तीरथ प्रगट करो, जहां गर्भ जन्म तप ज्ञान वरो।
नयनानंद पायन आनि परो. वांहीं के चरणसूं लौं लागी ॥४॥

३६—रागनी सोरठ (श्रीमल्लिनाथ)

थे देखो आली री मल्लिनाथ कुमार ॥ टेक ॥ माता जाकी प्रभावती देवी है जी, तात कुंभ भूपाल, त्यागो सब परिवार ॥१॥ तजि मिथुलापुर जोग लियो है. री वंश इक्ष्वाकु विसार कीनो सुवन विहार ॥२॥ भोगो राज न व्याह न कीनो री, बाल ब्रह्म तपधार, कीनो धैर्य अपार ॥३॥ कहत नैनसुख जोग जुगति से, री पहुँचे मुक्ति मझार, गावो मंगलचार ॥४॥

३७—राग विहाग (श्रीमुनिसुव्रतनाथ)

०अब सुधि लेहु हमारी. मुनि सुव्रत स्वामी ॥ टेक ॥
तुमसो देव न जग में दूजो, मैं दुखिया संसारी ॥ १ ॥
तुमहीं वैद्य धनन्तरि कहियो, तुमहीं मूल पंसारी ॥ २ ॥
घट घट की सब तुमहीं जानो, कहा दिखाऊं नारी ॥ ३ ॥
करम भरम ममरोग नसावो, इन मोहि दुख दिये भारी ॥४॥
तुम जग जीव अनंत उबारे, अबके बार हमारी ॥ ५ ॥
दृग सुख तारण तरण निरखि के, आयो शरण तिहारी ॥६॥

३८—रागनी जय जयवंती [श्रीनमिनाथ]

०कर बड़ भागन आलस त्यागन, नमि जिन पति तेरे पुत्र भयो है ॥ टेक ॥ तू सुख नींद मगन भइ सोवत, हम प्रभु

भक्ति सुधाम्बु पियो है ॥ १ ॥ जागहु तात विजय रथ राजा, तुम कुल चन्द्र उद्योत लियो है ॥ २ ॥ वरषत रतन सुधारस घर घर, मिथुलानगर दरिद्र गयो है ॥ ३ ॥ विप्रा मात उठी सुनि संस्तुति, फिरि प्रभु गोद पसार लियो है ॥ ४ ॥ नील कमल पग माँहि विराजत, वन्श इक्ष्वाक कृतार्थ कियो है ॥ ५ ॥ दग सुखदाल आस पूरण सव, सुख दुख द्वन्द विनाश दियो है ॥६॥

३६—राग जङ्गला और माड़ की ठुमरी (श्रीनेमिनाथ)

४०नेमि पियाके ढिग मोहि जानदे, मैं वारी नेमि पियाके ढिग मोहि जानदे ॥ टेक ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठा सब संसार। झूठी जग की मामता मोहि, कर्मों के लेख मिटानदे ॥ १ ॥ भजन करूंगी जोग धरूंगी, भजन जगत में सार। भजन विना मैं बहु दुख पाये, मेरी भवबाधा मिट जानदे ॥ २ ॥ सब जग स्वारथ का सगारो, अपना सगा न कोय। अपना साथी धरम है, मोहि भव सागर तिरजान दे ॥ ३ ॥ भोग विना निरधन दुखारा, तृष्णावस धनवान। नेमि विना सब जग दुखियारी, नेमी से नेम ग्रहान दे ॥ ४ ॥ नेम किये बहुते जन सुरझे, मेरे नेमि अधार। दग सुख राजुलि कहत सखी सुनि अब मोहि नेमि लहाण दे। ५।

४०—रागपरज [श्री पार्श्वनाथ]

भजि भजि रे मन परम सुधारस, नजि आरस पारस भगवान। टे० होय कुधात लगत जिस कांचन, वचन सुनत मिटि जाय अज्ञान। पूजत पद वसु कर्म विनाशैं, होय त्रिविध संकट अवसान ॥ १ ॥ मंगल होय दंगल विघटैं, प्रगटैं ऋद्धि समृद्धि अमान ॥ नागभये धरणेन्द्र छिनक में, बहुते जीव गये निर्वान ॥ २ ॥

अश्वसेन वामा कुल नन्दन, जग वन्दन बन्धन विघटान ॥
प्राणत स्वर्ग थकीच्चय आये, नगर बनारस जन्मे आन ॥ ३ ॥

नव कर उच्च सजल घन तन पग, पन्नग वन्श इक्ष्वाकु प्रमान ॥
अवधिशताब्द धरण दुखदारुण, हरण कमठ शठ विघन वितान । ४

विषम रूप भव कूप विषै हम, पावत हैं प्रभु दुःख महान ॥
नयनानंद विरद सुनि तुमरो, गावत भजन करो कल्यान ॥ ५ ॥

४१—रागपरज [श्रीवर्द्धमान]

जय श्री वीर जयति महावीरं, अतिवीरं सन्मति दातार ॥ टेक ॥

वर्द्धमान तुमरो जस जग में, तुम अन्तिम तीर्थंकर सार ।
पंचम काल विषै तुम शासन, करत जगज्जीवन उद्धार ॥ १ ॥

षोड्स स्वर्ग थकी चय आये, साढ शुकल छठ गर्भ मझार ।
चैत्र शुकल त्रोदशी के अवसर, कुंडलपुर तुमरो अवतार ॥ २ ॥

सिद्धारथ नृप बाप तुम्हारे, त्रिशला देवी मात तिहार ।
सात हाथ तन तुंग तुम्हारो, नाथ वन्श के तुम सिरदार ॥ ३ ॥

सिंह चिह्न तुमरे पद सोहै, माघ असित द्वादशि जग छार ।
दशमी असित वैसाख भये तुम, सकल दरब दरसी इकवार ॥ ४ ॥

पावांपुर सरवरपै प्रभु तुम, ध्यान धरो संयोग विसार ।
कार्तिक कृष्णा चौदसि की निशि, मावस प्रात वरी शिवनार ॥५॥

दुखम सुखम के तीन वरस अरु, शेष रहे वसुमास जवार ।
तादिन तुम्हें रतन दीपकतें, पूजैं सुर नर करि त्योहार ॥ ६ ॥

छस्से पांच बरस जब बीते, तब विक्रम सम्मत विस्तार ।
जब लग रहै धरा नभ मंडल, नयनानंद जपो नवकार ॥ ७ ॥

४२—राग बरवा।

कब धो मिलैं गुरुदेव हमारे, भर जोवन वनवास सिधारे ॥टेक॥
आतम लीन अनाकुल देवा, जाके सुमति उदै स्वयमेवा ॥ १ ॥
परहित हेत वचन विस्तारैं, सो गुरु भौ भौ सरण हमारे ॥ २ ॥
प्रगट करैं शिव मारग नीका, वरस रहो मनु मेघ अमीका ॥ ३ ॥
वैरी मीत बराबर जाकैं, कांचन कांच उपल सम ताकैं ॥ ४ ॥
महल मसान उद्यान सरीखे, जीवन मरन बराबर दीखे ॥ ५ ॥
करुणा अङ्ग रतन त्रय धारी, नैनानंद ताहि धोक हमारी ॥ ६ ॥

४३—राग भैरुंनर।

चरणन से आज मोरी लागी लगन ॥ टेक ॥
हाथ कमंडल कर में पीछीं, मिले गुरु निस्तारन तरन।
वन में बसैं कसैं इन्द्रीनिकूं, धारैं करुणा रूप नगन ॥
हित मित वचन धरम उपदेशैं, मानो वर्षत मेघ झरन।
नैनानन्द नमत है तिनकूं, जो नित आतम ध्यान मगन ॥

४४—रागनी झंझोटी खम्माचका जिला—ठुमरी पूर्वी।

हे वहनिया मेरा अङ्गना पावन भयोरी. हे दयाल गुरु आये, ॥ कृपाल गुरु आये, री वहनियां मेरा अङ्गना पावन भयोरी ॥टेक॥ मुक्ति पंथ दरसावन हारे री. हे रतन त्रय साथैं, मयूरपिच्छ हाथैंरी युगत कर मंडल भयोरी ॥ १ ॥ गमन ईर्याकर तपधारेरी, हैं विसारे मान माया, उवारैं पट कायारी, असन म्हारे आगम भवन भयोरी ॥ २ ॥ पांच प्रकार रतन की धारारी, विवुध वृन्द गेरैं, हे जै जै धुनि टेरैं री, सवन हग आनन्द छावन भयोरी ॥३॥

४५ - राग जंगला — ठुमरी ।

इक जोगी असन बनावैं, तसु भखत असन, अघन सन होत ॥ टेक

ज्ञान सुधारस जल भरलावे, चूल्हा शील बनावे ।
करम काष्ठकू चुग चुग चाले, ध्यान अगिनि प्रजलावे जी ॥ १ ॥
अनुभव भाजन, निजगुण तंदुल, समता क्षीर मिलावे ।
सोहं मिष्ट, निशंकित व्यंजन, समकित छौंक लगावे जी ॥ २ ॥
स्याद्वाद, सप्तभङ्ग मसाले, गिणती पार न पावे ।
निश्चय नयका, चमचा फेरे, विरध भावना भावेजी ॥ ३ ॥
आप पकावे, आपहि खावे, खावत नाहिं अघावे ॥
तदपि मुक्ति, पद पंकज सेवे, नयनानन्द सिरनावेजी ॥ ४ ॥

४६—रागधना श्री अथवा सोरठ ।

सतगुरु परम दयाल जगत में, सतगुरु परम दयाल ॥ टेक ॥
सब जीवनि की संशय मेटैं, देत सकल भय टाल ।
दुख सागर में डूबत जनकों, छिन में देत निकाल ॥ १ ॥
सुरग मुकति को पंथ बतावें, मेटिं करम भ्रम जाल ।
धरम सुधारस प्याय हरैं अघ, छिन में करत निहाल ॥ २ ॥
स्वान सिंह सतगुरु ने तारे, तारे गज विकराल ।
सुगुरु प्रताप भये तीर्थंकर, अरु तारे श्रीपाल ॥ ३ ॥
पांच शतक मुनि कोल्हू पीड़े, दंडक नृप चांडाल ।
होय जटायु सुगुरु पद सेये, पायो सुरग विशाल ॥ ४ ॥
बलि से दुष्ट सुपंथ लगाये, सतगुरु विष्णु दयाल ।
नयनानन्द सुगुरु सम जग में, कौन करै प्रतिपाल ॥ ५ ॥

[४७]

अब मुझे सुधि आई. जैन वाणी सुनि पाई ॥ टेक ॥
काल अनादि निगोद वेदना, मुगती कहिय न जाई ।
पड़ो नरक चिरकाल बिलायो. कोइ न शरण सहाई ॥ १ ॥
कबहुँक कंठ कुठारनि चीरा, दियो बांधि लटकाई ।
कबहुँक चीर डारि कोल्हू में, तिलवत देह पिलाई ॥ २ ॥
तातें तेल भाड़ में भुन्यो, कबहुँक शूल दिखाई ।
आंखन नून कान में डारे, नाना चीर बगाई ॥ ३ ॥
वैतरनी में बेर घंसीटो, गाल कुधात पिलाई ।
तांबो प्याय लोह की पूतली. तातो कर लिपटाई ॥ ४ ॥
मात पिता युवती सुत बांधव. संपति काम न आई ।
कबहुँक पशु पर जाय धरी तहां. वध बंधन अधिकाई ॥ ५ ॥
खनन तपन दाहन अरु धौंकन. बहुविधि मरन कराई ।
समन अमन छोड भांति भरे दुख, छेदन वेदन पाई ॥ ६ ॥
कबहुँक मानुष देह दिढंबो, विषयनि में लवलाई ।
अन्ध पंगु अरु रावरंक भयो, रोग सोग दुखदाई ॥ ७ ॥
कुष्ठ जलोदर और कठोदर इष्ट वियोग बुराई ।
देव भयो पर संपति निरखत, झुरझुर देह जराई ॥ ८ ॥
वाहन जानि तथा भव पूरण, निर्बल रहो पछिताई ।
यह विधि काल अनन्त भजो हम, मिथ्या भाव कमाई ॥ ९ ॥
अब्रत जोग फिरा भटकत ही, सम्यक दृष्टि न आई ।
अब जिन धर्म परम रस बरसे. भव तृष्णा न रहाई ॥ १० ॥
इस सुखदास आस भई पूरण, धन्न जिन वैन सहाई ॥

०४८—राग धनाश्री ।

जिन मत पर निधान, जगत में जिनमत परम निधान ॥टेक
जिन शासन तें उरझी सुरझे, छूटैं पाप महान ।
अरु जियाकूं अनुभव सुधि आवै, भागै भरम वितान ॥ १ ॥
वस्तु स्वरूप यथावत दरसै, सरसै भेद विज्ञान ।
सब जीवनि पर करुणा उपजै, जानै आप समान ॥ २ ॥
शूकर सिंह नवल मर्कट को, वर्णन आदि पुरान ।
भील भुजङ्ग मतंगज सुरझे, कर याको सर धान ॥ ३ ॥
अञ्जन आदि अधम बहु उतरे, पायो सुरग विमान ।
नर भव पाय मुकति पुनि पाई, नयनानन्द निधान ॥ ४ ॥

०४६—रागनी हंडोल—मल्हार ।

सुनोजी सुनोजी समभावसूं श्रीजिन वचन रसाल ॥ टेक ॥
द्रव्य करम ने तुम ठगे, भाव करम लये लार ।
नोकर मनिसूं बांधिये, दीनो चहुं गति डार ॥ १ ॥
कबहुँक नर्क दिखाइयो, कबहुंक पशु पर जाय ।
नव ग्रीवक लौं ले चढ़े, पटको भाव डिगाय ॥ २ ॥
जिसने जिनवच नहिं सुने, विकथा सुनी अपार ।
नर भव चिंतामणि रतन, दियो सिंधु में डार ॥ ३ ॥
पंच महाव्रत ना लिये, श्रावक व्रत दिये छार ।
तिनकूं नरक निकेत में, मारो चाम उपार ॥ ४ ॥
मति थोड़ी विपता घणी, कहै कहालों कौन ।
थोड़ी में बहुती लखो, होय सुघर नर जौन ॥ ५ ॥
पायो धरम जहाज अब, पायो नरभव सार ।
नैन सुक्ख भवसिंधु से, उतर उतर हो पार ॥६॥

५०—राग काफ़ी चाल होली की ।

जिन वाणी की सार न जानी ॥ टेक ॥ नरक उधारण, शिव सुख कारण, जनम जरा मृतहानी । उदर जलोदर, हरण सुधारस, काटन करम निहानी, बहुर तेरे हाथ न आनी ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि अमृत, एक जनम सुखदानी । दूजे जनम फिर होय भिखारी, यह भवभ्रमण मिटानी । तजो दुर्व्यसन कहानी ॥ २ ॥ व्याह सुता सुत बांटिलूं भाजी, हरिलूंनारी विरानी । ऐसे सोचत जात चले दिन, होत सरासर हानी । समझ मन मूरख प्रानी ॥ ३ ॥ भव वारिध दुस्तर के तरणकं, कारण नाव बखानी । खोल नयन आनन्द रूप से, धर सम्यक अज्ञानी । मोक्षपद मूल निशानी ॥ ४ ॥

५१—राग यमन कल्याण ।

जड़ता जिनराज विना कौन हरै मेरी ॥ टेक ॥

सुनत ही जिनेंद्रबैन, भयो मोहि अतुलचैन, सम्यक्के अभाव मैंने कीनी भव फेरी ॥ १ ॥ अतुल सुक्ख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्य को निधान, काया में विराजमान, मुक्ती मेरी चेरी ॥ २ ॥ द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भावकर्म असंयुक्त, निश्चयनय लोक मात्र, परजय वपुघेरी ॥ ३ ॥ जैसे दधिमांहि घीव तैसें जड़मांहिजीव देखी हम अपने नैन, आनन्द की ठेरी ॥ ४ ॥

५२—राग भैरूनर ।

संशय मिटै मेरी संशय मिटै, जिनवानी के सुने से मेरी संशय मिटै ॥ टेक ॥ पाप पुण्य का मारग सूझै भवभवकी मेरी

व्याधि कटै ॥ १ ॥ और ठौर मोहि विकलप उपजै ह्यां आकै आनन्द डटै ॥ २ ॥ निज पर भेद विज्ञान प्रकाशैं विषयन की मेरी चाह घटै ॥ ३ ॥ वानी सुन नैनानँद उपजै मोह तिमर का दोष हटै ॥ ४ ॥

५३—रागनी खम्माच की ठुमरी मल्हार ।

जिया तूने तजा धरम हितकारी । ऐसा जग जन तारक, कलमलहारक, अधम उधारक रतनसार, तैने तजा धरम हितकारी ॥ टेक ॥ तेरे कर्म बंध तोर डारे, तीनों दुक्खतैं उबारै भवतैं निकारै अवहारी ॥ १ ॥ नरक निकार लेय, तीर्थराज पद देय, धरमसो न कोऊ उपगारी ॥ २ ॥ नैनसुख धर्मसेवो, आतमस्वरूप वेवो, लागे पार खेवो तत्कारी ॥ ३ ॥

५४—धनसारी ।

जिनवानी रस पी हे जियरा जिनवानी रसपी ॥ टेक ॥
तुम हो अजर अमर जगनायक, ज्ञानसुधा सरसी ।
तेरो हरनहार नहीं कोई, क्यों मानत डरसी ॥ १ ॥
करम लिपत करमनतैं न्यारो, केवल मैं दरसी ।
ज्यों तिल तेल मैल सुवरण में, क्यों पुद्गल परसी ॥ २ ॥
जबलग परकूं निजकर मानत, तबलग दुखभरसी ।
छूटै नांहि काल के करसैं, मर मर फिर मरसी ॥ ३ ॥
पूजा दान शील तप धारो, सब पातिग टरसी ।
नयनानंद सुगुरुपद सेवो, भवसागर तरसी ॥ ४ ॥

५५- रागनी जंगला झंझौटी ।

सुगुरुकी वानीजी सुगुरुकी वानी-तेरे दिलमें क्यों न समानी सुगुरु की वानी-अरे अभिमानी सुगुरु की वानी ॥ टेक ॥ वीतराग हिम गिरतैं निकसी, यह गंगा सुखदानी, सप्तभिंगा, अमल तरंगा, भव आताप मिटानी ॥ १ ॥ जग जननी परमारथ करनी-भाषी केवल ज्ञानी सत्य सरुप यथास्थ निर्णय. सो तैंने विसरानी ॥ २ ॥ जामें बंध मोक्षकी कथनी. सुन सुरझें बहु प्राणी-पशु पक्षी से पाय मनुप पद, होय रहे शिवथानी ॥ ३ ॥ तैं मिथ्या मत देव धरम भज पियो मूढ़ मद पानी कीनी भूत ऊत की सेवा—मिली न कौड़ी कानी ॥ ४ ॥ भर्म अविद्या वस या जग में. खाक वहुत ही छानी । अव जिन वैन गंगतट सेवो, दृग सुख शिव सुखदानी ॥ ५ ॥

५६—छंदत्रोटक वृत सरस्वती अष्टक ।

मुनि भाव तरंग विशुद्ध तरे-रज पाय प्रताप विभाव हरे मद मोह मरुस्थल भेज जवे, जय वीर हिमाचल वाग भवे ॥ १ ॥ पद नंद तपासर की नगरी, लख तोही मिटै भव के भयरी, जड़ जीव चितावन रूप नवे ॥ २ ॥ भव कानन आंगन भीर भरयो, वहुवार कुजन्म कुयोनि परयो जग शूल निमूल निवज्र दवे ॥३॥ मम केश करांकुर जोरि धरै—लख कोट सुमेरु सिवाय परै, दृग पात पिता जननी सुचवे ॥ ४ ॥ लख सिंधु समाय न अश्रु ममं—मम सर्व हितू अन एक ममं, अति खेद भरे कर्मोद्भवे ॥ ५ ॥ अव आन परयौ तुमरे दरपैं—अपवर्ग धरो हमरे करपैं, जग जाल विमोचन भाल नवे ॥ ६ ॥ तुम नाम हरै भव खेद घना—

जिम तीव्र तपोहत पांथ जनान, पद्मासर आसर बात भवे ॥ ७ ॥ सब देवयजे अनतोप भयो—लखरूप कृतारथ जन्म थयो—चख अमृत वारिध कौन पिवे ॥ ८ ॥

गीता छंद ।

कुज्ञान छौनी मोक्ष दैनी आतमा दरसावनी ।
घट पट प्रकाशन जैन सासन संत जन मनभावनी ॥
रविनंद जुग जुग अब्द विक्रम साठ सित तेरस ससी ।
अरदास दग सुख दासकी सुन नाश भव बंधन फंसी ॥

५७—अर्हंतस्तुति बरवेकीठुमरी ।

लगे नैना समोसृत वारेसैं, हे वारेसं जग प्यारेसैं ॥ टेक ॥
विश्व तत्त्व ज्ञाता जगत्राता, करम भरम हर तारेसैं ॥१॥
तारण तरण सुभाव धरो जिन, पार लंघावन हारेसैं ॥२॥
बिन स्वारथ परमारथ कारण, डूबत काढ़न हारेसैं ॥३॥
दगसुख परम धरम हम पाया, स्याद्वादमत वारे सैं ॥४॥

५८—रागमांड देश की ठुमरी ।

प्रभु तार तार भवसिंधुपार-संकटमंझार-तुमहीअधार—टुक दे सहार, वेगी काढो मोरी नय्या ॥टेक॥ परमाद चोर कियो हम पैं जोर, भगपोततोर, दिये मझमें बोर तुम सम न और तारन तरय्या ॥ १ ॥ मोहि दंड दंड दियो दुख प्रचंड, कर खंड खंड चहुँगति में भंड तुम हो तरंड—तारो तारो मोरे संय्यां ॥२॥ दग सुखदास तोरो है हिरास-मेरी काढ़ फांस, हर भवको बास, हम करत आस—तू है जग उधरय्या ॥ ३ ॥

५९—खमाचकी ठुमरी ।

सेवैं सब सुरनर मुनि तेरोद्वार—तू है धरम अरथ काम मोक्ष को दिवय्या, तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके वार ॥ टेक ॥ अतुल दरसपुन, अतुल ज्ञान घन, अतुल सुख्य. बलको न पार ॥१॥ सकल छतरपति, करत भगति अति, चरण परन मस्तक-पसार ॥ २ ॥ तुमकूं नमाय माथ, कौन पै पसारुं हाथ, तुमको-दवय्या, देत लाखन गार ॥ ३ ॥ तुम विन रागदोष, देत हो सचन मोक्ष, लिये हैं पज्ञोप, सबही प्रकार ॥ ४ ॥ तुम सनमुख रहे, तिन्हें नैन सुख भये, तुम से विमुख, रुले जग मझार ॥ ५ ॥

६०—रागभैरवी

भाग जगोजी, आजतो म्हारो भाग जगोजी ॥ टेक ॥
आज भयो मेरा जन्म कृतारथ, आज भवोदधि पार लगोजी ॥ १ ॥
मैं तुम ढिग कबहूँ नहिं आयो, कर्मन के वस आप ठगो जी ॥२॥
वैनतेय सम दरस तिहारो, निरखत काल भुजङ्ग भगोजी ॥३॥
आज भई मेरी मनसा पूरण, आजही नयनानन्द पगोजी ॥ ४ ॥

६१—रागनी गारा और जिला ।

दरशन के देखत भूख टरी ॥ टेक ॥
समोशरन महावीर विराजैं, तीन छत्र शिर ऊपर छाजैं ।
भामण्डलसें रवि शशि लाजैं, चँवर ढुरत जैसे मेघ झरी ॥ १ ॥
सुरनर मुनि जन वैठे सारे, द्वादश सभा सुगणधर ग्यारे ।
सुनत धरम भये हरख अपारे, वानी प्रभु जी थारी प्रीतिभरी ॥२॥

मुनिवर धर्म और गृहवासी, दोनूं रीति जिनेश प्रकाशी।
सुनत कटी ममता की फांसी, तृष्णा डायन आप मरी ॥ ३ ॥
तुम दाता तुम ब्रह्म महेशा, तुमही धनन्तर वैद्य जिनेशा।
काटो नयनानन्द कलेशा, तुम ईश्वर तुम राम हरी ॥ ४ ॥

०६२—रागनी जंगला-ठुमरी।

मिटादो प्रभु व्यथा हमारी जी, एजी हम आये हैं दर्शन काज ॥ टेक ॥ सेठ सुदर्शन को प्रण राखो शूली सेज समान। अगनिसें सीता उवारी जी ॥ १ ॥ नाग नागनी जरत उवारे, दियो मन्त्र नवकार। मरन गति उनकी सुधारी जी ॥ २ ॥ त्रिभुवननाथ सुनो जस तेरी, जब आयो तुम पास। करो ना प्रभु मेरी गुजारीजी ॥ ३ ॥ भटकत भटकत दर्शन पायो जनम सफल भयो आज। लखी जो मैंने मुद्रा तुम्हारी जी ॥ ४ ॥ मैं चाहत तुम चरण शरण गत, मांगत हूँ तजि लाज। सुनोजी नैनानन्द की पुकारी जी ॥ ५ ॥

०६३—रागनी भैरूंनट-जंगला झंझौटीका जिला

जबसे तेरा मत जाना, तभी से आपा पिछाना ॥ टेक ॥
निज पर भेद विज्ञान प्रकाशो, तत्व प्रकाशे नाना।
दर्शन ज्ञानचरित्र आराधो, धरो जैन मतवाना ॥ १ ॥
काल अनादि भजो मिथ्यामत, धर्म मर्म अब जाना।
अब टूटी ममता की फांसी, समता ओर लुभाना ॥ २ ॥
अब ही मैं यह बात पिछानी, यह भव बन्दीखाना।
करम बन्ध जग में दुख पाऊं, मैं त्रिभुवन को राना ॥ ३ ॥

कहत नैनसुख तार तार प्रभु, तुम हो सतगुरु दाता।
नातर बिरद लजावै तेरो, देत सकल जग ताना ॥ ४ ॥

६४ रागदेश

ठाड़े जी गुसइयाँ तेरे दरबारे में, स्वामी म्हारा दे ॥ टेक ॥
करम हमारे बँध गये भारे जी, हो इनकूं दीजे निकार ॥ १ ॥
विघनहरन तुम सबही के दाताजी, हो अतिशय अगमअपार ॥२॥
निरखत रूप पुरन्दर हारे जी, हो जस गावत गणधार ॥ ३ ॥
मनमयूर नैनानन्द मानत जी, सुन सुन बचन निहार ॥ ४ ॥

६५ – रागनीजंगला।

भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजे,
अजि मैं तो दर्शनकारण आया, जी महाराज दर्शन दीजै ॥टेक॥
कोई तो मांगे प्रभु स्वर्ग सम्पदा, मैं थानैं पूजन आया ॥ १ ॥
इन्द्र न्हुलावैं तुम्हें क्षीरोदधि से; मैं प्रासुक जल लाया ॥ २ ॥
इन्द्र चढ़ावैं प्रभु रतन अमोलक, मैं तंदुल चुन लाया ॥ ३ ॥
इन्द्र करैं प्रभु तांडव नाटक, मैं जस गावन आया ॥ ४ ॥
कहैं नैनसुख दर्शन करके, अब नर भौ फलाया ॥ ५ ॥

६६—राग कालंगड़ा।

जो तुम प्रभु हो दीनदयाल, तो तुम निरखो मेरा हाल ॥ टेक ॥
नरक निगोद भरे दुःख भारी, हांरे निकस भ्रमो जगजाल।
जल थल पावक पवन सरोवर, घर घर जन्म मरो बेहाल ॥१॥
कृम पिपीलिका भ्रमर भये हम, विकलत्रय की सांखी चाल।
फिर हम भये असैनी सैनी, चढ़ि नव ग्रीव गिरे ततकाल ॥२॥

कहैं नैनसुख भवसागर सैं, बांह पकरि मोहि वेगि निकाल।
समरथ होयहुँ मैंन उवारो, तो न कहूं फिर दीनदयाल ॥ ३ ॥

६७—कुदेवत्याग विषय-राग-ठुमरी जंगला झंझौटी।

मैं दरश विना गया तरस, दरश की महिमा न जानी जी ॥टेक
मैं पूजे रागी देव गुरु, सेये अभिमानी जी।
हिंसा में माना धरम सुनी मिथ्या मत वानी जी ॥ १ ॥
मैं फिरा पूजता भूत ऊत अरु सेढ मसानी जी।
मैं जंत्र मंत्र वहु करे मनाये नाग भवानी जी ॥ २ ॥
मैं भैंसे वकरे भेड़ हते वहुतेरे प्राणी जी।
नहिं हुवा मनोरथ सिद्धि भये दुर्गति के दानी जी ॥ ३ ॥
मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानी जी।
नहीं आसा तृष्णा मरी सुगुरु की शीख न मानी जी ॥ ४ ॥
मैं फिरा रसायन हेत मिली नहीं कौड़ी कानी जी।
नहिं छुटा जन्म अरु मरन ख़ाक वहुतेरी छानी जी ॥ ५ ॥
लई भुगत चौरासी लाख सुनी नहीं तेरी वानी जी।
हुवा जन्म जन्म में ख्वार धरम को सार न जानी जी ॥ ६ ॥
तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घट मांहि समानी जी।
हो तुम ही तारण तरण तुमही हो मुक्ति निसैनी जी ॥ ७ ॥
है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानी जी।
हो षटमत में परधान नैनसुखदास वखानी जी ॥ ८ ॥

६८—राग खम्माच।

लागा हमारा तोसे ध्यान, दाता भवसे निकारो मोकों जी ।टेक।
तुम सर्वज्ञ सकल जग नायक, केवल ज्ञान निधान ॥ १ ॥
जीव दयामई धर्म तिहारो जी, षट मत मांहि प्रधान ॥ २ ॥

तुम बिन कौन हरै भव वाधाजी, सब जग देखा छान ॥ ३ ॥
दासनैनसुख कछु नहिं मांगत, जीदीजिये शिवपुरथान ॥ ४ ॥

६६—रागनी जङ्गला झंझोटी मारवा दादरा ।

किस विधि कीने करम चकचूर, थारी परम छिमापै जी अचंभा मोहि आवै प्रभु, किस विधि० ॥ टेक ॥ एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, वस्त्र शस्त्र नहिं पास हजूर । दूजे जीव दया के सागर, तीजे संतोषी भरपूर ॥ १ ॥ चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर । कोमल सरल वचन सतवक्ता, निर्लोभी संजम तपसूर ॥ २ ॥ त्यागी वैरागी तुम साहिव, आकिंचन व्रत धारी भूर । कैसे सहस्र अठारह दूषण, तजिकैं जीतो काम करूर ॥ ३ ॥ कैसे ज्ञानावरन निवारो, कैसे गेरो अदर्शन चूर । कैसे मोहमल्ल तुम जीतो, अन्तराय कैसे कियो निर्मूर ॥ ४ ॥ कैसे केवल ज्ञान उपायो, कैसे किये चारूं घाती दूर । सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, फिर भी नहिं प्रभु तुमकूं गरूर ॥ ५ ॥ करत आस अरदास नयनसुख, दीजे यह मोहि दान ज़रूर । जनम जनम पद पङ्कज सेऊं, और न कछु चित चाह हजूर ॥ ६ ॥

(७०)

जिस विध कीने करम चकचूर—सोई विधि बतलाऊं-तेरा भरम मिटाऊं वीरा जिस बिधि कीने करम चकचूर—टेक—सुनो संत अरहंत पंथजन—स्वपर दया जिसघट भरपूर—त्याग प्रपंचनिरीह करैं तप—ते नर जीतैं कर्म्म करूर ॥ १ ॥ तोड़े क्रोध

निठुरता अवनग—कपट क्रूर सिर डारी धूर—असत अंगकर भंग बतावैं—तेनर जीतैं करम करूर ॥२॥ लोभ कन्दरा के मुखमें भर काट असंजम लाय ज़रूर—विषय कुशील कुलाचल फूंकैं—ते नर जीतैं करमकरूर ॥ ३ ॥ परम क्षिमा मृदुभाव प्रकाशैं—शरल बृत्ति निर्वांछ कपूर—धरसंजम तप त्याग जगत सब—ध्यावैं सतूचित केवलनूर ॥ ४ ॥ यह शिवपंथ सनातन संतो—सादि अनादि अटल मशहूर—या मारग नयनानन्द पायो—इस विधि जीते करम करूर ॥ ५ ॥

७१—रागदेश ।

राजरी मूरत प्यारी लागै छै, म्हानैं राजरी मूरत० ॥ टेक ॥
नाम मन्त्र परताप राजरे, पाप भुजङ्गम भागै छै ॥ १ ॥
वचन सुनत तन मन सब हुलसैं, ज्ञान कला उर जागै छै ॥ २ ॥
ज्यों शशि निरखि कमोदिनि विकसै, चित चकोर पद पागै छै ॥३॥
दृग सुख ज्यों घन निरखि मगन हैं, मन मयूर अनुरागै छै ॥ ४॥

७२—रागनीटचौड़ी—पंचपरमेष्ठी स्तुति ।

जै जै जै जिन सिद्ध अचारज, उज्झाय साधव शिवकंत ॥ टेक ॥
जै कल्याण धाम जग तीरथ, पापक सकल चराचर अंत ।
पूजत नित पङ्कज तुमरे नर, नारायण अरु सबही संत ॥ १ ॥
शूकरसिंह नवल मर्कट के, सुनो सकल हमने विरतन्त ।
ऐसे अधम उधारे तुमनैं, अरुकीने तिनकूं अरहंन्त ॥ २ ॥
नाग बाघ दण्डक स्वानादिक, भील भेकसे जीव अनन्त ।
कर उद्धार पार किये जग से, जिन पूजे तुमकूं भगवन्त ॥ ३ ॥
राव रङ्क सेवक अरु शत्रु, निर्गुण गुणी निर्धन धनवन्त ।

सबको अभयदान तुम बांटो, जो भव के भय से भयवन्त ॥ ४ ॥
है व्याकरण विषय तुम साखा, अर्हं इति पूजाया सन्त ।
शब्द अखण्डित पूजा मंडित, पंडित जन मानो सब भन्त ॥ ५ ॥
वीतराग सर्वज्ञ भये तुम, तारण तरण स्वभाव धरन्त ।
तीरथ परम परम पुरुषोत्तम, परम गुरु सब सृष्टि कहन्त ॥ ६ ॥
ताते जल चन्दन हम अरचैं, अक्षत पुष्प चरु दीपन्त ।
धूप महाफल सैं तुम पूजा, है त्रिकाल त्रिभुवन जैवन्त ॥ ७ ॥
सब पर दया सभी के साहिब, दास नैनसुख एम भणन्त ।
कर उत्कृष्ट भृष्ट मत राखो, वेगहिकरो भव बाधा अन्त ॥ ८ ॥

७३—रागनी टप्पौड़ी

राज की सोच न काज की सोच न, सोच नहीं प्रभु नर्कगये की ॥ टेक ॥ स्वर्ग छुटेको सोच नहीं है. सोच नहीं तिरजंच भये की । जन्म मरण को सोच नहीं है, सोच नहीं कुलनीच गये की ॥ १ ॥ ताड़न तापनकी सोच नहीं है, सोच नहीं तन अगिनि दहे की । सीस छिदे की सोच नहीं है सोच नहीं व्रतभंग किये की ॥ २ ॥ ज्ञानलुटे की सोच नहीं है सोच नहीं दुर्ध्यान भये की । नयनानंद इक सोच भई अब, जिन पद भक्ति विसार दिये की ॥ ३ ॥

७४—राग भैरवी तथा खम्माच की ठुमरी ।

डूबी पड़ी भवसागर में, मोरी नय्याकूं पार उतारो महाराज ॥ टेक ॥ बीतो है अनंत काल, डूबी जन्म के ज़वाल । देके अवलम्ब, निस्तारो महाराज ॥ १ ॥ लोभ चक्र माँहि पार,

क्रोध मान माया भरी। राग द्वेष मच्छ से उबारो महाराज ॥ २ ॥ तारे धरमी अनेक, पापी हू उतारो एक। वीतराग नाम है तिहारो महाराज ॥ ३ ॥ कहैं दास नैनसुक्ख, मेटो मेरा भव दुक्ख, खैंचिके कुघाट से निकारो महाराज ॥ ४ ॥

७५—राग सारंग।

कर्मनिकी गति टारो स्वामी, कर्मनिकी गति टार ॥ टेक ॥
कर्मनि तैं मैं संकट पाये, गयो नर्क वहु वार ॥ १ ॥
कबहुँक पशु पर जाय धरी तहां, दुख पाये लद भार ॥ २ ॥
देव मनुष गति इष्ट वियोगी, दुख को वार न पार ॥ ३ ॥
आयो वीतराग लखि तुमकूं, राखो चरण मझार ॥ ४ ॥
नैनसुक्ख की अरज यही है, भवसागर से तार ॥ ५ ॥

७६—राग खम्माच-जंगला ग़ज़ल।

सुनरी सखी इक मेरी वात, आज नगर वरसैं रतन ॥ टेक ॥
लीनो है आज ऋषभ अवतार, नाभिराय घर हरष अपार।
रतन जु बरसैं पंच प्रकार, शीतल पवन सुधाकी भरन ॥ १ ॥
पुष्प वृष्टि दुँदुभि जयकार, बटत वधाई घर घर वार।
आज अजुध्या नगर मझार, पूजत इंद्र प्रभू के चरन ॥ २ ॥
सवज़ हुआ जंगल गुलज़ार, बन उपवन फूले इकवार।
कामिनि गावैं मंगलचार, बोलत पिक दिलचस्प वचन ॥ ३ ॥
चंदन से चरचे घर वार, लटकाये सखि वंदनवार।
है वो दग सुख को दातार, लीजे प्रभु की चरने शरन ॥ ४ ॥

०७७—राग ख्यौडी ।

आदि पुरुष तेरी शरणगही अब, टूटी सी नाव समुद्रविचबेड़ा ॥टेक॥
नाभि पिता मरु देवी के नंदन, इस अवसर कोई नहीं मेरा ।
अगम उदधिसैं पार लगावो, आन पहूँचा यहां काल लुटेरा ॥१॥
आतम गुणकी खेप लुटी सब, लूट लियो अनुभव धन मेरा ।
दीनवन्धु इस करम भंवर की, कठिन विपति में पड़ा थारा चेरा ॥२॥
क्यातो नय्या उलटी ही फेरो, क्या अब पार करो यह वेड़ा ।
नैनानंद की अरज़ यही है, नातर विरद लजावै तेरा ॥ ३ ॥

०७८—राग जंगलेकी लावनी वा ठुमरी (बधाई) ।

नाभि घरले चलरी आली, जहां जन्मे आदिजिनंद किया वैमान् विजय खाली ॥ टेक ॥ ऐरावत गज साज सुरग में, सुर सेना चाली । फूलन के गजरा गुंदलाये, वागन के माली ॥ १ ॥ नंद वृद्ध जय जयधुनि टेरैं, मोर मुकट वाली । झनन झनन दग दगन करत सुर दे देकर ताली ॥ २ ॥ गंधोदक की वृष्टि रतनकी धारा सुरढाली । शीतल मंद सुगंध पवन अब चारों दिश चाली ॥ ३ ॥ जल चंदन अक्षत सुरलाये, फूलन की डाली । चरु दीपक शुभ धूप फलादिक, भर भर कर थाली ॥ ४ ॥ सुफल भयो अब जन्म हमारो, चहुँ गति दुख टाली । नैनानंद भयो भविजनकूं, लखि यह खुशहाली ॥ ५ ॥

०७९—ठुमरी जंगला झंझोटीका जिला ।

नाभि कुवँरका देख दरश सब दूर भयो दिलका खटका ॥ टेक ॥
इंद्र वधू जिन मंगल गावैं, भेष किये नागर नट का ।
मेरु शिखर पर प्रथम इंद्रका, जिन उत्सवकं मन भटका ॥ १ ॥

पांडुक वन सिंहासन ऊपर, रतन माल मंडप लटका।
सुरगण ढालत क्षीरोदधि के, सहस अठोत्तर भर मटका ॥ २ ॥

तांडव नृत्य कियो सुरराई, सकल अंग मटका मटका।
सुर किन्नर जहां बीन बजावैं, कर कंकण झटका झटका ॥ ३ ॥

कुगुरु कुदेव कुलिंगी दुर्जन, देखनकूं भी नहिं फटका।
धर्मचोर पापी दुखदाई, देश त्याग हां सैं सटका ॥ ४ ॥

पुन्य भंडार भरे भविजीवन, सरन लह्यो प्रभु पद पटका।
सरधावंत भये मिथ्याती, पाप भार सिर से पटका ॥ ५ ॥

आज दिवस कूं दास नैन सुख, फिरताथा भटका भटका।
दीनबंधु अब वही दिवस है, देहू पुन्य हमरे बटका ॥ ६ ॥

८०— ठुमरी जंगला।

लिया आज प्रभुजी ने जनम सखी चलो अवधपुरी गुण गावन कूं ॥ टेक ॥ तुम सुनोगी सुहागन भाग भरी, चलो मोतियन चौक पुरावन को ॥ १ ॥ सुवरण कलश धरो शिर ऊपर, जल लावें प्रभु न्हावन को ॥२॥ भर भर थाल दरब के लेकर, चालो री अर्घ चढ़ावन को ॥ ३ ॥ नयनानंद कहैं सुनि सजनी, फेर न अवसर आवन को ॥ ४ ॥

०८१— रागभैरवीं।

तुम हमैं उतारो पार अजित जिन भवदधि बांह पकर के जी ॥ टेक ॥ हमकूं अष्ट कर्म वैरी ने लीने बांध जकर कैं जी। हम न चलेंगे उनके संग, रहैं तेरे द्वार पसर कैं जी ॥ १ ॥ अष्ट दरब ले पूजन आये, लेंगे दान झगर कैं जी। भावैं दया निमित शिव

दीजो, भावैं दीजो अकर कैं जी ॥ २ ॥ जिन जिन तुमको पूजे ध्याये, भजि गये कर्म सुकरि कैं जी। हग सुख के भव बंधन तोड़ो, लरि है नाहि मुकरि कैं जी । ॥ ३ ॥

८२-रागधनाश्री।

हमकूं पद्म प्रभु शरण तिहारी जी ॥ टेक ॥ पदमा जिनेश्वर पद्मा दायक, घायक हो भव के दुख भारी जी ॥ १ ॥ तुम सों देव न जग में दूजो, अरु हमसे दुखिया संसारी जी ॥ २ ॥ अपने भाव वकस मोहि दीजे, यह तुमसे अरदास हमारी जी ॥ ३ ॥ नैनसुख प्रभु तुमरी सेवा, भवदधि पार उतारनहारी जी ॥ ४ ॥

८३-रागनी टयौडी।

हमकूं आप करो अपने सम, पारस लखि अरदास करी है ॥ टेक ॥ नाम प्रभाव कुधात कनकहो, महिमा अगम अनंत भरी है। सकल सृष्टि उत्कृष्ट संपदा, तुम पद पंकज आय परी है ॥ १ ॥ जे तुम पद पद्माकर सेवैं, तिनतें भव आताप डरी है। जनम मरण दुख शोक विनाशन, ऐसी तुम पै परम जरी है ॥ २ ॥ कहत नैनसुख हमरी नय्या, इस भव भँवर मँझार पड़ी है।

८४-होली अध्यातम राजमती की-रागनीकाफ़ी।

होरी खेलत राजमतीरी। हे सखीरी-होरी खेलत राजमतीरी ॥ टेक ॥ संजमरूप वसंत धरो शिर, तजि भव भोग सतीरी। श्रीगिरनारि विजय वन कुंजन, कर्मन संग लरी री-कंत जाके

भये हैं जंती री ॥ १ ॥ भरि संतोष कुंड रंग सोहं, टेर पंच समिती री। रत्नत्रय व्रतधारि कोतूहल, आतमसूं करती री, स्वांग जगसुं डरती री ॥ २ ॥ रोके है आश्रव जन मतवारे, संवर डफ धरती री। तीन गुप्ति की ताल बजावत–भवसागर तरती री ॥ मानको मद हरती री ॥ ३ ॥ कर्म निर्जरा बजत मजीरा, शिव पथ गति भरती री। दृग सुख धरि सन्यास छिनक में, पाई है देव गती री। स्वर्ग अच्युत में सती री ॥ ४ ॥

०८५—राग काफी।

चल खेलिये होरी नेमि वैरागी भयोरी ॥ टेक ॥ केवल ज्ञान क्षीर सागर से, भाजन मन भरलो री। तामें पंच समिति की केशर घस घस रंग करो री–ध्यान के ख्याल लगो री ॥ १ ॥ समकित की पिचकारी ले ले, गुप्त सखी संग लो री। भव्य भाव शुभ हेरि हेरि कें, निज निज वसन रंगोरी—धरम सबही को सगोरी ॥ २ ॥ सप्त तत्व के लिये कुमकुमे, नव पदार्थ भर झोरी। भिन्न भिन्न भविजन पर फेंको, तृष्णामान हनोरी-वेग वनवास वसो री ॥ ३ ॥ मोह दंड होरी का फूंको, जातें दुख न भरो री। पंचमगति की राह यही है, आरत चित विसरो री–नैनसुख जोग धरो री ॥ ४ ॥

८६—राग कान्हड़ा तथा काफी।

अरी एरी मैं तो आज बसंत मनायो, पिया ज्ञान कान्हघर आयो सखी री मैं तो आज बसंत मनायो ॥ टेक ॥ कुबजा कुमति दसोटा दीनो, सुमति सुहाग बढ़ायो। शील चुनरिया प्रमुख

अभूषण, सहस अठारह लायो ॥ १ ॥ छिमा महावर हित मित महँदी, सरल सुगंध रचायो। चुरला सत्य शौच भुज भूषण, संजम शीस गुंदायो ॥ २ ॥ तप दुलड़ी नथ त्याग अकिंचन, व्रत लटकन लटकायो। गुणगण गोप गुलाल करमरज, घट वृज मांहि उड़ायो ॥ ३ ॥ भर पिचकारी भाव दयारस, पिया संग फाग मचायो। राधे सुमति निरखि पिव नैनन, आनंद उर न समायो ॥ ४ ॥

८७—पद उपदेशी—राग धमाल होली की चाल में।

अरे करले सफल जनम अपना, अब करले, अब करले सफल० ॥ टेक ॥ करले देव धरम गुरु पूजा, जीवन है निशिका सुपना ॥ १ ॥ विषयन में मति जन्म गमावै, यह है शठ भुसका तपना ॥ २ ॥ दान शील तप भावन भाले, तन जोबन सब है खपना ॥ ३ ॥ दग सुख पर उपगार विना सब झूंठी है जग की थपना ॥ ४ ॥

८८—रागकाफी।

/ ऐसो नर भव पाय गँवायो। हे गँवायो—ऐसो नर भव ॥ टेक ॥ धन कूं पाय दान नहिं दीनो. चारित चित नहिं लायो श्री जिनदेव की सेव न कीनी, मानुष जन्म लजायो—जगत में आयो न आयो ॥ १ ॥ विषय कषाय बढ़ो प्रति दिन दिन, आतम बल सु घटायो। तजि सतसंग भयो तु कुसंगी, मोक्ष कपाट लगायो नरक को राज कमायो ॥ २ ॥ रजक श्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नाहिं मनायो। त्रिभुवन पति होय भयो है

भिखारी, यह अचिरज मोहि आयो—कहातैं कनक फल खायो ॥ ३ ॥ कंद मूल मद मांस भखन कूं, नित प्रति चित्त लुभायो। श्रीजिन वचन सुधा सम तजि कैं, नयनानंद पछतायो-श्री जिन गुण नहीं गायो ॥ ४ ॥

८९—राग धनाश्री तथा देश भैरवी ।

अब तू निज घर आव, विकल मन अब तू निज घर आव ॥ टेक ॥
विकलप त्याग सुनूं जिन शासन, मत वीरन घबराव ।
पावैगा निधि तुमरी तुमकूं, श्रीजिन धर्म पसाव ॥ १ ॥
गति इंद्री अरु काय जोग पुनि, जानों वेद कषाय ।
ज्ञान भेद अरु संजम दर्शन, लेश्या भव्य सुभाव ॥ २ ॥
समकित सैंनी और अहारक, चौदह मारग नाव ।
नाम थापना दरब भाव करि, तत्व दरब दरसाव ॥ ३ ॥
यों जगरूप विचारि शुभाशुभ, करिकरि थिरता भाव ।
हरैं करम प्रगटै नयनानंद, भाषो सुगुरु उपावं ॥ ४ ॥

९०—राग धनाश्री तथा देश भैरवी ।

क्यों तुम कृपण भये, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भये ॥ टेक ॥
घट में ज्ञान निधान तुम्हारे, सो क्यों दाब रहे ।
भटकत विषय तुषन कूं डोलत, नृप हो रंकथये ॥ १ ॥
विपत काल मैं धन सब खरचत, ले ले करज नये ।
तुम धनवंत होय दुख पावो, मूरख भाव ठये ॥ २ ॥
कबहुँक शूकर कूकर उपजत, कबहुँक बैल भये ।
पिटत पिटत नर्कनि के माहीं, बालन पक रहे ॥ ३ ॥

दान शील तप भावन भाकर, संजम क्यों न लहे।
जाते नैन सुख्य तुम पाते, जाते करम दहे॥ ४॥

६१—राग ठेठ वरवा ठुमरी उपदेशी।

जिया न लगावैरे, देख कैं पराई माया॥ टेक॥ पुत्र कलत्र पराई संपति, इन संग मतना ठगावैना ठगावैरे॥ १॥ पुद्गल भिन्न भिन्न तुम चेतन, अंत न संग निभावै न निभावैरे॥ २॥ मतकरं विषै भोग की आशा, मत विष वेलि वढ़ावैरे वढ़ावैरे॥३॥ नयनानंद जे मूरख प्राणी, सोवत करम जगावैरे जगावैरे॥ ४॥

६२—राग धनाश्री।

तजि पुद्गल को संग, अज्ञानी जिया, तजि पुद्गल को संग॥ टेक॥ तुम पोपत यह दोप करत है. पय पिय जेम भुजंग। वड्वानल सम भूरि भयानक, घायक आतम अंग॥ १॥ यासंग पंचपाप में लिपटो, भुगती कुगति कुढंग-परिवर्तन के दुख वहुपाये, याही के परसंग॥ २॥ शीकर स्वातिसंग सागर के होवत वारि विहंग। भूपनको भूपणकी संगति, ठानत आदर भंग॥ ३॥ अजहू चेत भई सो भई है, रेमद मत्त मतंग। नयन सुख्य सतगुरु करुणानिधि, चकसत विभव अभंग॥ ४॥

६३—रागनी वरवा ठुमरी।

सवकरनी दयाविन थोथीरे॥ टेक॥ जीवदयाविन करनी निरफल, निष्फल तेरी पोथीरे॥ १॥ चंद विना जैसे निष्फल, रजनी, आव विना जैसे मोतीरे॥ २॥ नीर विना जैसे सरवर

निरफल, ज्ञान बिना जिय ज्योतीरे ॥ ३ ॥ छाया हीन तरोवर को छवि, नैनानंद नहिं होतीरे ॥ ४ ॥

०९४—राग देश।

मुक्तिकी आशा लगी, अरुब्रह्मकूं जाना नहीं ॥ टेक ॥
घर छोड़ के जोगी हुवा, अनुभावकूं ठाना नहीं।
जिन धर्मकूं अपना सगा अज्ञान ते माना नहीं ॥ १ ॥
जाहिर में तू त्यागी हुवा, बातिन तेरा छाना नहीं।
ऐ यार अपनी भूल में, विषवेल फल खाना नहीं ॥ २ ॥
संसार कूं त्यागे बिना, निर्वाण पद पाना नहीं।
संतोष बिन अब नैनसुख; तुमकूं मज़ा आना नहीं ॥ ३ ॥

०९५—राग सारङ्ग।

न कर करम की तू आसरे, अरेजिया न कर करमकी तू आसरे ॥टेक॥
अंतराय भई प्रथम जिनेश्वर, जाके सुरपति दासरे।
दरव क्षेत्र अरुकाल भाव लखि, तजि विधि को विसवासरे ॥ १ ॥
छहो खंडको नाथ भरथ नृप, मान गलत भयो तासरे।
सीता सती इंद्र करि पूजित, भयो विजन वन वासरे ॥ २
खगचर वंश तिलक नृप रावण, करमनतें भयो नाशरे।
तीर्थंकरकूं होत परिषह, करम बड़े दुख वासरे ॥ ३ ॥
आशा करत करम सरसावत, ज्यों पय पीवत खासरे।
नैन सुख्य चिरकाल भयो अब, काढ़ो गलकी फांसरे ॥ ४ ॥

०९६—लावनी राग जंगला गारा ।

क्यों परमादी हुवा वे तुझकूं बीता काल अनंता ॥ टेक ॥
आयो निकस निगोद सेरे. भटको थावर योनि ।
मिथ्या दर्शनते तन धारे, भूजल पावक पौन ॥ १ ॥
धारी काया काष्ठ कीरे दहन पचन के हेत ।
सूक्ष्म और थूल तन धारो, अजहू न करता चेत ॥ २ ॥
विकल त्रय में भरमतारे, भयो असैनी अंग ।
सैनो ह्वै हिंसा में राचो, पी लई मिथ्या भंग ॥ ३ ॥
सुर नर नारक जोनि मेंरे. इष्ट अनिष्ट संयोग ।
दर्शन ज्ञान चरण धर भाई, नैनानंद मनोग ॥ ४ ॥

०९७—राग बरवा-परस्त्री निषेध का पद ।

यह तो काली नागनी रे, जीया तजो पराई नार ॥ टेक ॥
नारा नहिं यह नागनी रे, यह है विष की वेल ।
नागिनी काटै क्रोधसों रे, यह मारे हँस खेल ॥ १ ॥
बातें करती और सोंरे, मन में राखै और ।
वा कूं मिले और कूं चाहै, वा कूं तजि कैं और ॥ २ ॥
नैन मिलाये मनकूं बांधै अंग मिलाये कर्म ।
धोखा देकर दुःख में डारै, याहि न आवे शर्म ॥३॥
तीर्थंकर से याकूं त्यागैं, जो त्रिभुवन के राय ।
नैनानंद नरक की नगरी, सत गुरु दई बताय ॥ ४ ॥

९८—राग विहाग तथा खम्माच खास ।

अरे जिया जीव दया से तिरैगा, दया विन घर घर जन्म रैगा ॥ टेक ॥ पर सिर काट शील निज चाहत रे शठ तापत

अगिनि जरैगा ॥ १ ॥ दीप लगाय पोप निज चाहै, जांभ छिद्रै अरुनर्क परैगा ॥ २ ॥ छलकर पर धन हरण चितारै, दिन दिन नमक समान गरैगा ॥ ३ ॥ सेय कुशील विषै विष पोषत, अहि मुख अमृत नाहिं झरैगा ॥ ४ ॥ वहु आरंभ परिग्रह के वस, पड़ि कर नर्क निगोद सरैगा ॥ ५ ॥ पपण पाप त्यागि नयनानंद, धर्म भवांवुधि पार करैगा ॥ ६ ॥

०९९—ठुमरी पीलू की राग कजरी पूर्वी ।

भजन विन काया तेरी योंही रे चली ॥ टेक ॥ बालापन तेरा गया रे खेल में, भोगत विषय को यह जवानी रे ढली ॥ १ ॥ लागि रहो गृह काज विषै नित, कीने अघ भारी पर नारी रे छली ॥ २ ॥ वृद्ध भयो तन कांपन लागा, करि कुवरानी तेरो ग्रीवा रे हली ॥ ३ ॥ नयनानंद तजो जग आशा, मानो सतगुरु की यह शिक्षा रे भली ॥ ४ ॥

०१००—राग ठुमरी बरवा पीलू वा विहाग खास ।

नहिं कियो भजन जियां वीतो काल अपारे ॥ टेक ॥
निकसि निगोद रुलो त्रस थावर, भू जल अगिनि बयारे ॥१॥
सूक्षम थूल तरोवर उपजो, क्रमि पिपील भृंगारे ॥२॥
पंचेंद्री भयो समन अमन तन, किये पाप अधिकारे ॥३॥
जूवा खेल मांस मद चाखे, कुविषन सप्त प्रकारे ॥४॥
अब अघ तजि भजि परमातम पद, जो त्रिभुवन में सारे ॥५॥
नैन सुख्य भगवन्त भजन विन, कब उतरोगे पारे ॥६॥

१०१—रागठुमरी बरवापीलू ।

थिर रहै न जग में, मतना जीव विध्वंशै ॥ टेक ॥
जीव सताये नष्ट होत हैं, राज तेज अहदंशै ॥ १ ॥
जीव दुखाय नष्ट भये जादव, दंडक भये विध्वंशै ॥ २ ॥
ब्रह्म सताये गये नरक में, रावण कौरव कंशै ॥ ३ ॥
दयावंत उन्नत पद पावैं, तीर्थंकर अवतंशै ॥ ४ ॥
नयनानंद दया तैं शिव पद, पावैं संत प्रसंशै ॥ ५ ॥

०१०२—राग मांड देश की ठुमरी ।

/ सुनरे गंवार, नितके लवार, तेरे घट मझार, परगट दिदार । मत फिरै ख्वार, उरझी को सुरझाले । सुनरे गंवार० ॥ टेक ॥ तजिमन विकार, अनुभवकूं धार. कर वार वार. निज पर विचार—तू है समय सार अपने ही गुण गाले ॥ १ ॥ तूही भव सरूप, तूही शिव सरूप, होके ब्रह्म रूप, पड़ा नर्क कूप, विषयन के तृप संतो मन को हटाले ॥ २ ॥ कहैं दास नैन, आनंद दैन, सुन जैन वैन, जासूं होय चैन—तजि मोह सैन—नरभो फल पाले ॥ ३ ॥

०१०३—रागखास बरवे की ठुमरी ।

सुन सुनरे, मन मेरी बतियां, अब कुछ करो ना भलाई जग में रे । सुन सुनरे ॥ टेक ॥ मन सरता न वचन मृदु बोलै, कपट बसै तेरी रगरग मैंरे ॥ १ ॥ बोलत झूंठ लोभ के कारण, रीत गही ठुकही ठग मैंरे ॥ २ ॥ नेम न तप न दान मन भावत,

ढूंढत संपति पग पग मैंरे ॥ ३ । भजन समाधि न भाव शील के भग सें भागिग्घे भग मैंरे ॥ ४ ॥ किहि विधि सुख उपजै सुनि वीरण, फंदक कूर वोये मग मैंरे ॥ ५ ॥ दग सुख धरम लखन जिन बिसरा, अंतर कौन मनुष्य खग मैंरे ॥ ६ ॥

१०४ राग जोगिया आसावरी ।

पापनि से नित डरिये, अरे मन पापन से नित डरिये ॥ टेक ॥
हिंसा झूंठ वचन अरु चोरी, परनारी नहिं हरिये ।
निज परकूं दुख दायनि डायन, तृष्णावेग विसरिये ॥ १ ॥
जासें परभव विगड़ै वीरण, ऐसो काज न करिये ।
ज्यों मधु विंदु विषय के कारण, अंध कूप में परिये ॥ २ ॥
गुरु उपदेश विमान वैठ के, यहां तैं वेग निकरिये ।
नयनानंद अचल पद पावैं, भव सागर सूं तरिये ॥ ३ ॥

०१०५—रागनी जोगिया आसावरी में ।

है वोही हितू हमारे, जो हमकूं डूबत जग से निकारै ॥ टेक ॥
सांचो पंथ हमैं वतलावै, सांचे वैन उचारै ।
राग दोष ते मत नहिं पोषै, स्वपर सुहित चित धारै ॥ १ ॥
हम दुखिया दुख मेटन आये, जनम मरण के हारे ।
जो कोई हमकूं कुमति सिखावैं, सोई शत्रु हमारे ॥ २ ॥
कोटि ग्रंथ का सार यही है, पुण्य स्वपर उपगारे ।
दग सुख जे पर अहित विचारैं, ते पापी हत्यारे ॥ ३ ॥

१०६—राग देशवा सोरठ ।

म्हारी सरधा में भंग परो, सरधा में भंग परो । हे विभावों में भाव धरो । म्हारी सर्धा में भंग परो ॥ टेक ॥ चारों कषाय

गिनी हम अपनी, मद जोवन से भरो। है कुदेवों को संग करो ॥ १ ॥ दरब करम की ममता नल में, आपही आप जरो-है कुलिंगी को स्वांग भरो ॥ २ ॥ भाव करम नो कर्म जुदे हैं, मैं चैतन्य खरो-है कुग्यानी के पंथ परो ॥ ३ ॥ ज्यों तिल तेल मैल सुवरण में, दधि में घीव भरो—है अनादि को जोग जुरो ॥ ४ ॥ मुकति भये बड़भाग नैनसुख, तलखि तेल परो—है, जड़ाजड़ भिन्न करो ॥ ५ ॥

०१०७—दया की महिमा-मरहटी लंगड़ी रङ्गत जिसके ४ चौक हैं।

बंधे हैं अपनी भूल से भाई, बंधे बंधे मरजावैंगे, दया जीव की करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ टेक ॥ दया से परजा कहैगी राजा, दया से संत कहावैंगे। दया के कारण, सेठ अरु साहूकार बतावैंगे ॥ जे दुखिया की मदद करैंगे, इस जग में जस पावैंगे। विपत काल में, वही फिर मदद हमैं पहुँचावैंगे ॥ धन जोवन के मद में हम तुम, जिसका जीव दुखावैंगे। पुण्य गिरैगा, तो वे फिर छाती पर चढ़ जावैंगे ॥ छेदैं अरु भेदैंगे तनकूं, काढ़ कलेजा खावैंगे। दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावैंगे ॥ १ ॥ झूंठ वचन से मान घटैगा, अरु जिसके ढिंग जावैंगे। सत्य वचन भी, कहैंगे तो सब झूंठ बतावैंगे ॥ वसु राजा की तरह झूंठ से नरक कुण्ड में जावैंगे। सत्यघोष की, तरह फिर राजदण्ड भी पावैंगे ॥ चोरी के कारण से प्राणी, कुल कलङ्क लग जावैंगे। रावण की ज्यों, वंश अरु बेलिनाश होजावैंगे ॥ फिर नरकों में उनके मुख को कूंचा बाल जलावैंगे। दया जीव की, करैंगे तो

हम भी सुख पावैंगे ॥ २ ॥ मैथुन व्यसन बुरा है प्राणी, जो इन में फँस जावेंगे । उन जीवों के, बीज अरु वंश नष्ट हो जावेंगे ॥ फिर उनके संतान न होगी, होगी तो मर जावेंगे । जो न मरेंगे तो उनके तन से रोग न जावेंगे ॥ नरकों में उनकूं लोहे के, थंभों से लटकावेंगे ॥ लोह की पुतली, गरम कर छाती से चिपकावेंगे ॥ हाहाकार करैगा जब वह, मुख में बांस चलावेंगे । दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ ३ ॥ जिनकैं नहीं परिग्रह संख्या, तृष्णावन्त कहावेंगे । लोभ के कारण, झूंठ और चोरी में मन लावेंगे ॥ गुरुकूं मार देवकूं बेचैं, सभा से धर्म उठावेंगे । बाल बृद्ध के, कण्ठ में फांसी दुष्ट लगावेंगे ॥ राजा पकड़ धरै शूली पर, फेर नरक में जावेंगे । वचन अगोचर, नर्क के बहुत काल दुख पावेंगे ॥ कहैं नैनसुख दास दया से, सब सङ्कट कट जावेंगे । दया जीव की, करैंगे तो हम भी सुख पावेंगे ॥ ४ ॥

१०८–राग विहाग की ठुमरी ।

देखो भूल हमारी, हम सङ्कट पाये ॥ टेक ॥

सिद्ध समान स्वरूप हमारा, डोलूं जेम भिखारी ॥ १ ॥
पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिग्रह धारी ॥ २ ॥
द्रव्य कर्म वस भाव कर्म कर, निजगल फांसी डारी ॥३॥
नो करमन ते मलिन कियो चित, बांधे बंधन भारी ॥४॥
बोये पेड़ बंबूल जिन्होंने, खावैं क्यों सहकारी ॥ ५ ॥
करम कमाये आगे आवैं, भोगैं सब संसारी ॥ ६ ॥
नैन सुक्ख अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी ॥७॥

१०६ -राग जंगला।

कीना जी मैं कीना जग में, जैन बनज जसकारी जी ॥ टेक ॥
धर्म द्वीप दुर्गम्य दिशावर, सतगुरु संग व्यौपारी जी।
केवल ज्ञान खान से लेकर, माल भरे हैं भारी जी ॥ १ ॥
कर्म काष्ट के शकटा कीनें, द्विविध धरम विष भारी जी।
भक्ति आर से हांक चलाये, आगम सड़क मंझारी जी ॥ २ ॥
सप्त तत्व अरु नव पदार्थ भरि, तीन गुप्त मणि भारी जी।
भवि जहुरी विन कौन खरीदै, खेप अमोलक म्हारी जी ॥ ३ ॥
मिथ्या देश उलंघ जतन से, भव समुद्र से पारी जी।
नयनानन्द खेप गुरु जन संग, मुक्ति दीप में ढारी जी ॥ ४ ॥

११०—राग जंगले की ठुमरी।

हथना पुर तीरथ परसन कूं, मेरा मन उमगा जैसे सजल घटा ॥टेक
पूजत शांत प्रशांत भई मेरी, विषय अगन आताप लटा ॥ १ ॥
सुख अंकूर बढ़े उर अन्तर, अब सब दुख दुर्भिक्ष हटा ॥ २ ॥
धन्न यह भूमि जहां तीर्थङ्कर, धरि आतापन जोग डटा ॥ ३ ॥
नयनानन्द अनन्द भये अब, परसि तपोवन गङ्ग तटा ॥ ४ ॥

१११—राग बरवे की ठुमरी।

यह तपोबन वह बन हैरी, जहां लिया श्रीजी ने जोग ॥ टेक ॥
चक्रवर्ति भये तीन जिनेश्वर, जानत हैं सब लोग री ॥ १ ॥
तृणवत तजि वनकूं गये प्रभु, त्याग सकल सुख भोग री ॥ २ ॥
गरभ जनम तप केवल ज्ञानभयो, वानीखिरी थी अमोघ री ॥ ३ ॥
बहुत जीव तिरे इस बन से, कट गये कर्म कुरोग री ॥ ४ ॥

शांति कुन्थ अरु मल्लि परसि के, मिटगये मेरे सब रोग री ॥ ५ ॥
नयनानन्द भयो वड़भागन, हथनापुर संजोग री ॥ ६ ॥

११२—खयाल चौबंध राग जंगला ।

तू तो कर ले श्री जी का न्हवन जानरा जल की ।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो हो जाय हलकी ॥ टेक
अरे तैंने मल मल धोई देह खिडाये पानी ।
नहीं किया श्रीजी का न्हवन अरे अज्ञानी ॥ १ ॥
अरे तैंने सपरश के वस भोगे भोग घनेरे ।
नहीं भये तदपि संपूर्ण मनोरथ तेरे ॥ २ ॥
अरे तैंने ब्रह्मचर्य गजराज बेचि खर लीनो ।
ले जगत कलङ्क चले दुर्गति कहा कीनो ॥ ३ ॥
अरे अजहूँ चेत अचेत ख़बर नहीं कल की ।
तेरे सिरसें पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११३—कलंगी छन्द ।

तैंने रसना के वस पुद्गल सब चख लीने ।
तैंने भून भुलस पटकायकूं सङ्कट दीने ॥ १ ॥
तैने भाषी वारण विकथा असत कहानी ।
दुर्बचन से बीधे मरम सताने प्राणी ॥ २ ॥
तैने चाखे नागर पान, जीभकूं छीली ।
तेरी तदपि रही यह जीभ, थूकं से गीली ॥ ३ ॥
अब करले भजन मेरे वीर, आश तजि कल की ।
तेरे सिर से पाप की पोट ज्यूं होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११४–कलंगी छंद।

तू तो टांक मास की डली को नाक बतावै।
अरु बांध लांकलूं खड्ग कुंवांक धरावै॥ १॥
उसकी तो तीन हैं फांक समझले मन में।
हो जैसा तीन का आंक देख दर्पण में॥ २॥
तैं तो इससे सूंघ लिये पुद्गल जग के सारे।
नहीं गई सिणक रहो भिणक समझले प्यारे॥ ३॥
अब प्रभु की सेवा करो तजो पुद्गल की।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी॥ ४॥

११५–कलंगी छंद।

तैंने आंखों में अञ्जन वार अनन्ती डारे।
लिये तीन लोक के आँज पदारथ सारे॥ १॥
लिये निरख जन्म अरु मरण अनन्ती बारे।
सब जानत हैं पर मानत क्यों नहीं प्यारे॥ २॥
तू तो धोवन अपनी सौ वर आंख अज्ञानी।
बहुतेरे रिताए कूप खिंडाये पानी॥ ३॥
कर दर्श प्रभू जी का दृष्टि हटे तेरी छल की।
तेरे सिरसे पाप की पोट जो होजाय हलकी॥ ४॥

११६–कलंगी छंद।

तैंने कानों से सुन [illegible] ई जगत की असत कहानी।
नहिं सका तदपि [illegible]न छैल मैल का पानी॥ १॥

तू तो भुल रहा निशदिन हरदम मौत विरानी ।
तेरे सिर पर खेल रहा काल क्या यह नहीं जानी ॥२॥
अब करले प्रभु जी का न्हवन सुनले जिन वानी ।
तेरी होजाय निर्मल देह यह फेर न आनी ॥ ३ ॥
कहै नैनसुक्ख अब तज दे बात छल बल की ।
तेरे सिर से पाप की पोट जो होजाय हलकी ॥ ४ ॥

११७—लावनी जंगले की ।

रावण से श्री रघुवीर कहैं निज मन की ।
तू जनक सुता दे लाय चाह नहिं धन की ॥ टेक ॥
अरे मेरा जो कोई करै बिगाड़ कछुक नहीं भाखूं ।
मैं औगुण पर गुण करूं बैर नहीं राखूं ॥१॥
अरे मैं सतगुरु के मुख सुनी जैन की बानी ।
यह कलह जगत के बीच स्वपर दुख दानी ॥ २ ॥
अरे यह बिन कारण बहु जीव मरेंगे रण में ।
तू जनकसुता दे ल्याय जाऊं मैं बन में ॥ ३ ॥
अरे मुझे जगत सम्पदा लिया बिन फीकी ।
तू लादे सीता सती कहत हूँ नीकी ॥ ४ ॥
अरे वह मो जीवन दुख सहै पड़ी बस तेरे ।
अब तोकूं हतनेंं पखे शोच मन मेरे ॥ ५ ॥
तब लङ्कपती , यूं कहै सुनो रघुराई ।
जो लिखी हमारे कर्म मिटै न मिटाई ॥ ६ ॥
अब पछताये क्या होय जीव लूं तेरा ।
कहै नैनसुक्ख रावण कूं काल ने घेरा ॥ ७ ॥

११८ - रागनी जोगिया असावरी की चाल में।

जिया तैंने करी है कुमति संगयारी, मैं जानी बात तुम्हारी रे। टेक
हमसे तो तू छलना ही डोलै, उनसैं प्रीति करारी रे।
जी का झाड़ होयगा तेरा, जो तोहि लागत प्यारी रे॥ १॥

क्या तुम भूलगये उस दिनकूं, पड़े थे निगोद मंझारी।
एक स्वांस में जनम अठारा, पाते वेदन भारी रे॥ २॥

अजहूँ हम तुमकूं समझावत, सुनरे पीव अनारी।
तजि परसङ्ग कुमति सौतन की, नातर होगी ख्वारी रे॥ ३॥

नयनानन्द चलो जब ह्यांसे, कीजो याद हमारी।
जो न करूं उपगार तुम्हारा, तो मोहि दीजो गारी रे॥ ४॥

११९ रागनी खास देश की ठुमरी।

हम देखे जगत के साधु रे, कहीं साधु नज़र नहीं आते हैं। टेक
कोई अङ्ग भभूति रमाते हैं, कोई केश नखून बढ़ाते हैं।
कोई कन्द मूल फल खाते हैं, वे साध का नाम लजाते हैं॥ १
कोई नाहक कान फटाते हैं, फिर घर घर अलख जगाते हैं।
कलि झूंठ जगत भरमाते हैं, गहि हाथ नरक लेजाते हैं॥ २
घर छांड़ि विपन चले जाते हैं, मठ छाप धुजा बनवाते हैं।
वे पूजा भेंट धराते हैं, सो वमन करी फिर खाते हैं॥ ३
निर्ग्रन्थ गुरू नहीं पाते हैं, जो मारग मोक्ष बताते हैं।
नयनानन्द सीस नमाते हैं, हम उनके दास कहाते हैं॥ ४

१२०—ठुमरी देश और माड की।

प्रभु धन्य धन्य, जग मन्य मन्य, तुम हो प्रछन्न, हम लिये जन्य तुम सम न अन्य. जग जन हितकारी ॥टेक॥ सुनिये जिनेन्द्र, मैं हूं सुरसुरेन्द्र, ये हैं मम उपेन्द्र. ये हैं सुर गजेन्द्र, चालिये जिनेन्द्र, कीजे न्हवन त्यारी ॥१॥ हे जगत भान, किरपानिधान, मोहि लो पिछान, सौधर्म जान. सुरपति ईशान, ये हैं संग हमारी ॥ २ ॥ सन्मति कुमार, माहेन्द्र लार, अरु सुर अपार, चारों प्रकार, मैं तो ले कैलार; तोरी सेवा उर धारी ॥ ३ ॥ हे दीनबंधु, हे दयासिंधु. मैं महरचंद, तोहि बंदिबंदि, लूंगा उछंग—कीजे गज असवारी ॥ ४ ॥ नहीं करी देर, गये गिरि सुमेर, पांडुक वनेर, पांडुक सिलेर, लाय जाय घेर—ताकी पूजा विस्तारी ॥ ५ ॥ भरि क्षीर वारि, कलशा हजार. प्रभु सीस ढार, जिन गुण उचार, करि जै जैकार—अरु कीनी विधिसारी ॥६॥ कहि मिष्टबैन, हरिमात सैन, करि सुजस जैन, लगे गोददैन, भई सुख्य नैन—मानो फूली फुलवारी ॥ ७ ॥

१२१- राग देश विहाग परज के जिले की ठुमरी।

भजन से रख ध्यान प्राणी, भजन से रख ध्यान ॥ टेक ॥
भजन सैं इंद्रादि पद हों, चालत बैठ बिमान।
भजन सैं होत हरि प्रति हरी बलि वलवान ॥ १ ॥
भजन से खट खंड नव निधि, होत भरत समान।
तिरै भवसागर तुरत, है पाप को अवसान ॥ २ ॥
नवल शूकर सिंह मर्कट, करि भजन संलीन।
भये वृषभ सेनादिक जगत गुरु, भजन के परवान ॥ ३ ॥

भजन से भये पूज्य मुनिजन, गोतमादि महान ।
भजन ही से तिरे भील जटायु, मींडक स्वान ॥ ४ ॥
कहत नयनानंद जग में, भजन सम न निधान ।
भये भजन से अर्हंत सिद्ध, आचार्य गये निर्वान ॥ ५ ॥

ऋषभ जिन जन्म मंगल बधाई ।

१२२—रागनी भैरवी तथा खास धनाश्री ।

अवधिपुर आज कृतार्थ भयो, हे अवधिपुर आज० ॥ टेक ॥
तजि सरवारथ सिद्धि परमारथ, दायक देव चयो ।
नाभि नृपति मरु देवी के मंदिर, श्री अवतार लयो ॥ १ ॥
रंक भये धनवंत जगत मैं, कृपण कलेश वह्यो ।
नर्कनि में नारक सुख पायो, मोपै न जाय कह्यो ॥ २ ॥
जो आनंद त्रिकाल चतुर्गति, भावी भूत भयो ।
सो आनंद नयन हम निरखो, आदि जिनेंद्र जयो ॥ ३ ॥

१२३—लावनी पीलू बरवा ।

चले सुरासुर सकल अवधिपुर, श्रीजिन जन्म न्हवन करनैं ॥टेक॥
हुकम सुधर्म सुरेंद्र चढ़ायो, अपने निकट कुबेर बुलायो । श्रीजिन जन्म वृतांत सुनायो, सकल संपदा लार, प्रभु पै वार लगी रोसी परनैं ॥ १ ॥ चले कलप वासी सब देवा, चले भुवन पति करने सेवा । ज्योतिष अरु व्यतंर वसुभेवा, चौबीस अरु चालीस दोय बत्तीस इंद्र चाले शर ने ॥ २ ॥ सेना मत्त सप्त विधि लाये, गज घोटक रथ पाप्त सजाये । वृष गंधर्व

नृत्य को धाये, बन घन गगन मझार—हो जै जै कार सो महिमा को बरनैं ॥ ३ ॥ नागदत्त ऐरावत सुन्दर, सो सजि कैं ले प्रथम पुरंदर । गये अवधि नृप नाभि के मंदिर, माया निद्रा रची हैरे प्रभु शची—लगी जब कर धरनैं ॥ ४ ॥ लोचन सहस सुरेंद्र बनाये, उमंगि नयन सुख धाये हृदय लिपटाय—लगै संस्तुति करनैं ॥ ५ ॥

१२४—ठुमरी पीलू बरवा ।

भयो पावन आज जनम हमरो, हैं जनम हमरो, तनमन हमरो ॥टे०
अब सुरेंद्र पद को फल पायो, आन कियो दर्शन तुमरो ॥ १ ॥
बिन तुम भक्ति वृथा था यह तन, जा मैं था अस्थि न चमरो ॥२॥
तुम सेवा ते सेवैं सुरगण, नातर कोई न दे दमरो ॥ ३ ॥
अब मैं अमर यथार्थ कहायो, करसी क्या दुर्जन जमरो ॥ ४ ॥
लेय जिनेंद्र सुरेंद्र चढो गज, चलद्यो सुरगिरि पैं अमरो ॥ ५ ॥
पढ़ियो इम सुखजिनगुण मंगल, हरियो भव भव को भमरो ॥ ६ ॥

१२५—रागनी गौंड की पुर्वी ठुमरी ।

जनमे जिनेंद्र, आये सुरेंद्र, लेगये गिरेंद्र, पांडुक बनेंद्र, थापे शिलेंद्र पीठेंद्र बिछायो । जन्मे जिनेंद्र० ॥ टेक ॥
तजि तजि विमान, सुर आनि आनि, दियो नभ समान, मंडप वहां तान, छवि निरखि परख अमर न मन भायो ॥ १ ॥
जामें लगे लाल, मोतियन की माल, गावैं देव बाल, जिन गुण विशाल, लखि असम काल सुरपति फरमायो ॥ २ ॥
भो भो सुरेंद्र, भो भो उपेंद्र, भो भो धनेंद्र, सेवो यह जिनेंद्र

जावो सूर्य चंद्र क्षीरो दधि जललावो ॥ ३ ॥ रचि असंख्यात, पैढ़ा विख्यात, सब एक साथ, पुलकंत गात हाथों हाथ कलश लाय दीजै स्वामी न्हावो ॥ ४ ॥ करि भुज हज़ार, पढ़ि मंत्रसार, सब कलश ढार, दिये एक ही बार—पड़ी धारा धध धध भई अछालो लगावो ॥ ५ ॥ या जिन प्रसंग, भई जैन गंग, प्रगटी अभंग, उछटी तरंग लई सुर न अंग-सोई गङ्गा नित ध्यावो ॥६॥ यह अति विचित्र, गङ्गा है मित्र सुनिकैं चरित्र चित्त हो पवित्र, जित नित न भ्रमू दग सुख नहिं पायो ॥ ७ ॥

१२६ · रागनी जंगला।

ले गये अवधिपुर प्रभुजी को सुर जय जय उचारैं। लेगये अ०। अजि जै जै उचारैं अघजारैं भरि अंजुलि अरघ उतारैं। बजत तान तुम, तननननन, सब इंद्र चँवर ढारैं। लेगये० ॥टेक॥ बजी धूधूकिट, धूधूकिट, बजत मजीरा धुन झाझाझा, झाझाझा करै, सारंगी सितार पुन द्रुम द्रुम द्रुमक पखावज, मृदंग बाजै, भेरी बीणा बांसरी, तबल ढोल गाजै, गावैं लेले चकफेरी नाचैं नभ में सुरी, छम छननन नन, इतनी जितने तारे ॥ १ ॥ कोई कहै नंदोवृद्धो, जीवो एजिनेंद्रचंद्र, कोई कहै जीवो राजा, नाभि नगरी को इंद्र, कोई कहै भ्रात जग, त्रानाका ए जीवो माता, जायो जिन मुकती को, दाता सोवै साता पाय, सेजपै मगन, सन सन ननन इन हमकूं निस्तारे ॥ २ ॥ ऐसी विधि करत उछाव गीत गावन तब, घेर लियो जङ्गल ज़मीन असमान सब, जल थल बन घन घाट बाट कुंजरोक, पूजै राम मंदिर बजाये शंख ठोक ठोक, लाये धाये झोकि कै

गजेंद्र धंवन ननननन नरचौक परेसारे ॥ ३ ॥ शचीनें उतार जिन राज गोद मांहि लिये, जापे खाने मांहि जाय माताकूं प्रणाम किये, कैसे जिन माता कूं जगावै मीत गावै गीत, कैसे इंद्र प्रभु के पिता से करै बात चीत, कहो नैनानंद विरतंत तुम तन ननन ज्यों सुनैं संत सारे ॥ ४ ॥

१२७—चाल गंगावासी मेवाती ।

लिया ऋषभ देव अवतार, किया सुरपति नै निरत आके—लिया ऋषभ० । अजी निरत किया आके, हर्षा के, प्रभूजी के नव भव को दरशाके, सरर सरर कर सारंगी तँबूरा, नाचै पोरी पोरी मट काके ॥ टेक ॥ अजी प्रथम प्रकाशी वानै, इंद्रजाल क्रिया ऐसी, आज लों जगत में सुनी न काहू देखी तैसी, आयो वह छबीला चटकीला यों मुकट बांध—छम देसी कूदो मानूं आकूदो पुनों का चांद, मनकूं हरत, गति भरत प्रभू को पूजे धरणी सों सिरन्या के ॥ १ ॥ अजी भुजों पै चढ़ाये हैं हज़ारों देवी देव जिन—हाथों की हथेली पै जमाए हैं अखाड़े तिन ता धिन्ना ता धिन्ना—किट किट धिन्ना उनकी प्यारी लागै धुम किट धुम किट बाजै तब्ला नाजै प्रभुजी के आगै सैनों में रिझावै—तिर्छी तिर्छी पड लगावै—उड़ जावै भजन गाके ॥ २ ॥ अजी छिन में जा वंदै वह तो नंदीश्वर द्वीप आप पांचूं मेरु वंद आ मृदंग पै लगावै थाप—वंदै ढाई द्वीप तेरा द्वीप के सकल चैत्य—तीनों लोक मांहि पूज आवै बिंब नित्य नित्य—आवै झपटि सभू—हीं पै दौडा लेवे दम—करे छमछम—मन मोहे जी मुसकाके ॥ ३ ॥ अजी अमृत के लागै झड़, बरसी रतन धारा—सीरी सीरी चालै

पौन—किए देव जै जै कारा, भर भर झारी, बरसावैं फूल दे दे ताल महकै सुगंध चहकै मुचंग, पड़ताल, जन्मे जिनेंद्र, भयो नाभि के अनंद- नैनानंद यों सुरेंद्र गए भक्ति कूं वताय के ॥ ४ ॥

१२८—मल्हार ।

शुभ के बदरवा झुक आयरी-शुभके हे झुकिआयझुकि आयरी ॥टे०
सखी अब नीके दिन आए-देखो जगत पुन्य घन धाए—१
सखि भविजन भाग विजोए-अहमेंद्र चयो अघ धोए—२
उझली सर्वारथ वृष्टी-भई ऋषभ जनम की वृष्टी—३
सखि जमे हरष अंकूरे-अब फले कलपतरु पूरे—४
घन फल दुर्भिक्ष हटायो-शिव फल को संवत आयो—५
अभिलाष अताप निवारी-चलै शीतल पवन पियारी—६
सखि वरसैं अमृत फुवारे-सुन जै जै कार उचारैं—७
सुर पुष्प रतन बरसावैं-गंधर्व प्रभु के जस गावैं—८
चलो अवधिनगर सुखदाई-प्रभु तात को देन वधाई—९
आवो दर्शन प्रभु जी का करलो- नयनानंद सैं घर भरलो—१०

(१२९)

जुग जुग जीवा ऋषभ अवतार—तुम जुग जुग ।
तुम सकल जगत दुख हरण करन सुख, जुग जुग ॥ टेक ॥
एक तो प्रभु तुम करी तपस्या, दूजे तीर्थंकर अवतार ।
तीजे धर्म तीर्थ के कर्ता, मोक्ष पंथ दर्शावन हार ॥ १ ॥
चौथे स्वयं बुद्ध व्रत धरिहो, करिहो भविजन को उद्धार ।
निरकै मोक्ष वरोगे साहिब, फेर न आवोगे संसार ॥ २ ॥

चरम शरणी तुम हो साहिब, मैं चेरा तुमरा नफ़ीर।
राखो नाथ चरण में अपने, तुम भगवन मैं भक्त तुम्हार ॥३॥
तारे बहुत भव्यजन तुमने, हमसे अधम रहे मझधार।
अब के नाथ हमें निस्तारो, तुमरा जन्म हमारी वार ॥ ४ ॥
नाचैं इन्द्र जिनेंद्र निहारैं, लेत बलय्यां भुजा पसार।
लख २ मुख दुखसुख न समावे, अविलोके कर नयन हज़ार ॥५॥

१३०—रागनी देशवा सोरठा।

छाये पुन्य जगत जन शुभ की घड़ी, शुभकी घड़ी है शुभ की वड़ी-छाये ॥ टेक ॥ जगो सुहाग भाग जग जनका-परजा सकल निहाल करी। जन्मे तीर्थंकर या भूपर-नर्कादिक में चैन परी ॥ १ ॥ चिरजीवो यह बालक जग में- जापै शिव त्रिय माँग भरी। जुग जुग जीवो तुम मात पित नित-सूबस बसो यह अवधिपुरी ॥ २ ॥ घर घर पुण्य सुधारस बरसैं- लग रहीं पंचाश्चर्य झड़ी नयनानंद सुरेंद्र भगति लख-भवि जन सम्यक् दृष्टि धरी ॥ ३ ॥

(१३१)

सुनरे अज्ञान, टुकदे के कान अपनी समान, लख सबकी जान, दशप्राण किसी प्राणी के ना संहारे ॥ टेक ॥ मत काट पीट, सपरस कूं ढीठ, मतना घँसीट, मतना उचींट, मत रस अनिष्ठ, सींचै भींचै जारै मारै ॥ १ ॥ तू तो इष्ट मिष्ट खावे रस विशिष्ट, योंहि दिव्य दिष्ट लख हाल श्रिष्ट, होकै वलिष्ट, रसना को न विदारै ॥ २ ॥ मत नाक तोड़, मत आंख फोड़,

मत कोन मोड़, ये पांच छोड़, दुख दें कठोड़ कोसैं जीव जन्तु सारे ॥ ३ ॥ मन टूट जाय, सुध छूट जाय, बोला न जाय, झोला न जाय, सब देन हाय, अरु आवैंगे हत्यारे ॥ ४ ॥ ले हाय हंस, भयो नष्ट कंस, रावण का वंश, भयो सब विध्वंस, कौरव समंस दुर्गति में पधारे ॥ ५ ॥ मत रूंध स्वास, मूंद न उस्वास, है यही खास, जीवन की आस, मत करै नाश, ये घर्साले हैं सारे ॥ ६ ॥ दिन दोकी जोत, है सिर पै मौत, जब लग उद्योत, ले जोत पोत, फिर रान होत, जीती बाजी मत हारे ॥ ७ ॥ सुन कर समंत, चित कर प्रशांत, है यह ही तंत, जा बैठ अंत, दिग सुख अनंत, मत अपने बिगारे ॥ ८ ॥

(१३२)

भज राम नाम-मत चाव चाम-दुनिया के नाम-आवै न काम धन धाम गाम-तेरे संग ना चलैंगे ॥ टेक ॥ रख छिमा भाव कोमल सुभाव छल मत चलाव-रख सत में चाव-लालच हटाव सब चरण में लगैंगे ॥ १ ॥ संजम कूं साध-तपकूं अराध-तज आधि व्याधि-जग की उपाधि- कर दोष याद-हर कर्म गलैंगे ॥ २ ॥ नित पाल शील-मत करै ढील-खड़ो सीस झील-पर काल भील-तेरी फौज फील कूं-कुशील ये दलैंगे ॥ ३ ॥ यदि है अफ़ील बनजा पिपील-मत कर दलील-मत बन रज़ील-तेरे सब वकील कर हील कूं टलैंगे ॥ ४ ॥ कहै नैनसुख-पल मेट दुक्ख है यही मुख्य-मत रह विमुख्य तेरे हाड़ प्रमुख-सब लोक में रलैंगे ॥ ५ ॥

(१३३)

कहैं बार बार सतगुरु पुकार-सुनैं दयाधार-पट मन को सार करो दान चार-दोनों भौ में सुख पावो ॥ टेक ॥ यहां हो जश अपार व्हांहो जग उद्धार-टलै, पाप भार-फलै पुन्यडार-कुछ लेलोलार-खाली हाथों मत जावो ॥ १ ॥ दीजो रोग जान-औषधि को दान-जामें गुण महान-औगुण जरान-शुभ खान पान-देथकान को मिटावें ॥ २ ॥ मूरख पिछान दीजो विद्यादान-जामें पापहानि-संपति की खान-देके स्वर्थज्ञान-परमारथ सिखायो ॥ ३ ॥ भयवान जान-शक्ति प्रधान-धनजन मकान-पट भाजनानि-देकै दान मान समझावो भ्रम हटावो ॥ ४ ॥ लगै भूख प्यास-अति होय त्रास-नरपशु अनाश-आवै संत पास-कणमण गिरास-देकै शुद्ध जल प्यावो ॥ ५ ॥ इस भांति यार-दीजो दान चार-औषधि सुधार-विद्याउदार-सब भय निवार-कैं अहार करवावो-कहै दास नैन-आनंद-दैन-बोलो मिष्ट वैन-पावै सर्व चैन-सीखो जैन पेन-जासूं सूधे शिवजावो ।

(१३४)

कब जगैं भाग-करू' जगत त्याग-होकै वीतराग-सेऊं धर्म जाग-कब कर्म नाग-वन आग को बुझाओ ॥ टेक ॥ जामैं भर्म कांस-कुकरम की तांस-पापों की फांस-व्यसनों की धांस-उत्पत्ति नास-से निकास कब पाऊं ॥ १ ॥ जो मैं भोग झुंड-विषयन के झुंड-चौबीस कुंड-पचीस रुंड-कब अग्नि तुंड-दुर्ध्यान को भगाऊं जामैं धर्म फील-अधरम की झील-आकाश चील पुद्गल के टील-भरे काल भील- क्या दलील ह्यांचलाऊं-२-आवै कब

मिलैं गुरु दयाल- टूटे मोह जाल-मेरा होनिहाल-कह अपना हाल-मस्तक जा झुकाऊं ॥ ४ ॥ हर अशुभ वृत्ति-करूं शुभप्रवृति-शुभ अशुभ कृत्ति-तजहो निवृत्ति-कर निज परमातम को एकी भावभाऊं ॥५॥ दग सुखबुद्ध-कियो अतो विरुद्ध-दर्शन विशुद्ध चित रहो अशुद्ध-कर शुद्धप्रवृत्तिकर-शिवपद पाऊं-६-

१३५—जंगला ठुमरी ग़ज़ल

जनम विरथा न गंवावोजी-पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ-विर्थान-टेक—मनना मीत विषयतरु बोवै-मत सूली चढ़ निर्भय सोवै-तज चारों पांचों सातों-मत पाप कमावो जी ॥१॥ त्रिपद श्रीवपद जीव चितारो-झटपट पद अरु पांच विचारो-द्वादश-वाण चतुर शर धर तेरह मन ध्यावो जी ॥२॥ यही मोक्ष का मूल बतायो-अरिहंतादि महंतन गायो-कर प्रतीत वरतो सम्यक-सच्चे कहलावो जी ॥३॥ तज चौवीस अठारह बारो-पाप पचीस छत्तीस संभारो-ले छयालीस-खपाआठों-सीधे शिवजावो जी ॥ ४ ॥ जो तैं नाम नयन सुख पायो-तो तैं निजपग क्यों न लखायो-तज परमार्थ निज अर्थ गहो मत नाम लजावो जी ॥ ५ ॥

१३६—रागनी भैरवी-पूर्वी ठुमरी ।

देखो सुखड़ मधु बिंदु के कारण जग जीवन की मूढ़ दशा-टेक-
भूलं पंथ फिरैं भव कानन-जैसें कटक विच व्याकुल शशा—१
भटकैं चहुँगतिके पथ में नित-लागी अगनि जामें चारों दिशा—२
लटकें भवतरु पकड़ कूप भ्रम-माखी परिजन खा तनसा—३
काटत स्याम स्वेत चूहे जड़-निश दिन आयुर्बला घसा—४

नीचै नरक सरप मुख फाड़त-भक्षा गम लख हंसा हंसा—५
सिर पर काल बली गज गूंजत-कहत सुगुरू हाथ पसा पसा—६
काढूं तोहि विमान चढ़ाऊँ-पड़त बूंद मुख लागी चसा—७
भाषत नाक चढ़ाय मूढ़ इम-कैसे तजूं मुख आयो गसा—८
टूटी जड़ पाताल पधारे—नर्क कुंड में जाय धंसा—९
धिग् धिग् भूल मूल हम खोयो-सारस में तज फेर फंसा-१०
नैनानंद अंध जन दुख को-मानत सुख तन डसा डसा ११

१३७—रागनी जंगला झंझोटी का जिला।

समझ मेरे प्यारे जरा-अब तो समझ मेरे प्यारे जरा-
हे प्यारे ज़रो मतवारे ज़रा -टेक-
तुम त्रिभवन में फिर आए-चौरासी में धक्के खाये -१
तैंने स्वर्ग बिमान सजाए-पशुगति में ढले बहु ढोए—२
चढ़ तख्त निशान बजाये-पड़े नर्क शांस छिद्वाये—३
तूंने सपरस सब करलीने-अरु पुद्गल सब चरलीने—४
तूंने दुग्धामृत बहुपीये-पड़ कुगति मूत पीजीये—५
तूंने सूंघे इतर हजारों-पड़ा नर्क सड़ा हर वारों—६
तैं तो जगत व्यवस्था निरखा-अपनी गत क्यूं ना परखी—७
तू तो नौ ग्रीवक लो सारे-गया नर्क अनंती वारे—८
किये ऊंच नीच सब काजा-भया पंडित मूरख राजा—९
रह्यो कौन काम तोहि बाकी-तुम आस करतहो बाकी-१०
तूने जो कुछ करी कमाई-भौ भौ अपनी बतलाई-११
आए नंग धड़ंग उघारे-गये ख़ाली हाथ पसारे-१२
क्यूं पाप करै पर कारण-कर सम्यक दर्शन धारण·१३

तिहुँ काल अचल सुख पावो–तिहुँ लोकमें संत कहावो–१४
इगसुख सब पाप गलैया–नहिं काल अनन्त रूलैया–१५

१२८—ठुमरी जंगला पूर्वी दादरा।

कुछ ले चल भवोदधिपार—मंज़िल दूर पड़ी ॥ टेक ॥
थोड़ा सा दिन है झटक है भयानक–कर्मों के विकट पहाड़—१
दिन तो छिपेगा झुकैगी अंधेरी–दुख देंगी लुटेरन की डार—२
लूटेंगे धन तेरा चूटेंगे तन–तुझे देंगे नरक में डार—३
आश्रव रुकादे निराश्रव चुकादे–कोई रोके ना इस उस पार—४
मरज़ी पड़े तो चुकादे भली विध–जैसा सुजन व्यवहार—५
मंदिर बनादे प्रभावनामें देदे–साधू को देदे आहार—६
केवली प्रणीत जिन शासन लिखायदे–विद्याका करदे उद्धार—७
दुःखित को देदे खिलादे सुखित को–तीरथ पै करदे उपकार—८
तजदे कुध्यानों को लातों मैं देदे–सिर से पटक दे सारा भार—९
ग्रन्थ को बिसारोपधारोशिवपंथ को–नहिं त्यागीकोटोकैसत्कार–१०
भावै इगानंद सदानंद पावो–आवो न जावो संसार–११

१२९—रागनी सारंग।

वश कीजे-प्यारे वश कीजे-अरेहारि गुमानी मन वश कीजे। है साधू उपधि तज सारी-जगत में जस लीजे ॥ टेक ॥ पाप करत गया काल अनंता-अब होजा ब्रह्मचारी-कमर दृढ़ कस-लीजे ॥ १ ॥ उदय विपाक सहा सब सुख दुख-जस अपजस सुनगारी-समाधी में धंस दीजे ॥ २ ॥ समता सुधा सिंधु में

शुभकर-हरो कलुषता खारी-निजआत्म रस पीजे ॥ ३ ॥ नैनानंद बंध सब टूटैं-कटैं व्याधि हत्यारी-मुक्ती में बस लीजे ॥ ४ ॥

१४०—राग बरवा पीलू खम्माचका दादारा वा कजरी रागनी पूर्वी ।

मेरी करो करुणा परूं जी थारे पांव-मेरी ॥ टेक ॥ लीनी तोरी शरणाजी-तीनों मोरे हरणा-जनम जरा मरणा ॥ १ ॥ मोसो नहीं दुखियाजी-तोसो नहीं सुखिया-मैं मंगता तुम राव ॥ २ ॥ काढ़ो कारागृह सैं जी-उभारो भवद्रहसैं-कर्म महा गढ़ढाव ॥ ३ ॥ दीजो नैना सुख तुम-कीजो सारै दुख गुम-रखियोमत उरझाव ॥४॥

१४१—बरवा जंगला ।

/ हे किस वन ढूंढूं आली—तज गये गुरु म्हारे संसार ॥ टेक ॥ होय विरागी ममता त्यागी—त्यागो मिथ्याचार—जन धन त्याग भये ब्रह्मचारी तृष्णा दई है बिसार ॥ १ ॥ साज दयारथ ले सत-सारथ-सर्वपदारथडार-करपुरुषारथ-जय मदनारथ-पटक भवभ-वपार ॥ २ ॥ भज भवभारथ-हरिभमारथ-धर्मारथ लियोलार-गये-कर्मारथ-विजय हितारथ-परमारथ पथसार ॥ ३ ॥ किस पर्वत किस कंदर अंदर किस समशान मंझार-ढूंढूं किस चौपट किस को टर-कौन नदी किसपार ॥ ४ ॥ के पद्मासन-कैखड्गासन-कैपर्यंक पसार-जानै कहां तिष्ठैं किस आसन जिन शासन अनुसार ॥ ५ ॥ मुनि अर्जिका श्रावक पेख्यल—दुर्लभ इस संसार जो कहुँ दृष्टि पड़ै तो बतादे—मानूंगी उपगार ॥ ६ ॥ त्रिविध भेष

गुण दोष नयन सुख-त्रिविध त्रिकाल निहार-करियो नवधा भक्ति भवि-कजन दीजे शुद्ध अहार ॥ ७ ॥

१४२ जंगला झंझोटी ।

करले कुछ अपना उपगार-मूढ़-तू तो बहुत रुला जग जाल में-अज्ञानी अब ॥ टेक ॥ एक तो तजदे तू तीन मूढता-दूजे अष्ट महामदछार-तीजे शंकादिकमल आठों खोकर तू मन को धोडार ॥ १ ॥ चौथे तज दे तू षट अनायतन-दर्शन मोहनी तीन विडार-चतु चारित्र मोहनि का मदहर-अवसर आवे हाथनयार ॥२॥ वसो अनादिनिगोद विषैशठ-काल लब्धि कर भयो निकार-नर नारक पशु स्वर्ग विषै किये पंचपरावर्तन बहुवार ॥ ३ ॥ चौदह लाख मनुष गति भरम्यो-पड्योसड्यो मल मूत्र मंझार-बोल सकै अनहाल सकैतन ऊंधे मुख लटको हरवार ॥ ४ ॥ चारलाख परजाय नरक की-भुगती भिन्नकरम अनुसार-कुट कुटपिट पिट छिद छिद भिद भिद-कियो सागरां हा हा कार ॥ ५ ॥ भरमे बासठलाख पशुपु गति-नाना विधि किये मरण अपार । खिच खिच भिच भिच कुचल कुचल मर-स्वांस स्वांस मैं ठारहवार ॥६॥ चारलाख सुर योनि विडंब्यो-जहां सागरां सुख भंडार-झुर झुर मर मर रुल्यो जगत में-भोगे सुख ठाए विपति पहाड़ ॥ ७ ॥ कहत नैनसुख सुन मेरे मनवा-अब तो तज निज दोष गंवार-आगम आप्त गुरु तत्वारथ-परखहोय जासे वेड़ापार ॥ ८ ॥

१४३—ठुमरी ।

मैं पूजे पंच कुमार-मिटी भव बंध अटक मेरी ॥ टेक ॥
जय वासु पूज्य भगवान मल्लि मैं करी याद तेरी-
भए नेमिपार्श्व महावीर प्रगट गई टूट मोह बेड़ी ॥ १ ॥
आयो तुम दर्वार करी प्रक्षाल तीन वेरी-
भई जन्म जरामरणादि भवांतप शीतल जिनमेरी ॥ २ ॥
चर्चत चंदन शांति भए प्रभु पंच पाप बैरी-
भई अक्षय ऋद्धि समृद्धि करी जव अक्षत की ढेरी ॥३॥
पुष्प हरैं कंदर्प क्षुधा-नैवेद्य ढाय गेरी-
दीपक चढ़ाय चरणारविंद मैं आंख खुली मेरी ॥ ४ ॥
अष्ट कर्म को वंश भयो विध्वंस धूप खेरी-
फलतैं अजरामर आश भई-शिव संपत अवनेड़ी॥ ५ ॥
अर्घ अनर्घ आरती आरति मेटी सब मेरी-
कहै नैन चैन मांगै मंगत भव भव सेवा तेरी ॥ ६ ॥

१४४—चाल तुलसा महारानी नमो नमो—

तुमही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो—हे महेश्वर हो परमेश्वर हो ॥टेक॥
निरावरण चिद्ब्रह्म स्वरूपी-तुम जित कर्म वलेश्वर हो ॥ १ ॥
तुम शंकर कल्यान के कर्त्ता-सुख भर्ता भूतेश्वर हो ॥ २ ॥
हर्ता हो सब कर्म कुलाचल-मृत्यु जय अमरेश्वर हो ॥ ३ ॥
निर्वंधन भव बंधन भेत्ता-नेत्ता-मुक्ति पथेश्वर हो ॥ ४ ॥
ध्यावै सुर नर मुनिगण तुमको-तातैं आप गणेश्वर हो ॥ ५ ॥
पूजत पाप अताप मिटै सब-शांतिप्रद चंद्रेश्वर हो ॥ ६ ॥

इन्द्रादिक पद पंकज सेवैं-तातैं पूज्य पूजेश्वर हो ॥ ७ ॥
मेटो जन्म जरादि त्रिपुर दुख-तुम सच्चे मुक्तेश्वर हो ॥ ८ ॥
गृन्ह गृन्ह पर ब्रह्म आरती-तुम दग सुख प्रदेश्वर हो ॥ ९ ॥

१४५—देश की ठुमरी ।

जिनके हृदय सम्यक्त ना, करनी करै तो क्या करो ॥ टेक ॥
षट खंड को स्वामी भयो, ब्रह्मांड में नामी भयो ।
दिये दान चार प्रकार अरु, दिक्षा धरी तो क्या धरी ॥ १ ॥
तिल तुप परिग्रह तजि दिये, अति उग्र तप जप व्रत किये ।
पाली दया षट काय की, भिक्षा करी तो क्या करी ॥ २ ॥
कल्पों किया उपदेश को, छुटवा दिये दुर्भेष को ।
पहुँचा दिये बहु मुक्ति में, रक्षा करी तो क्या करी ॥ ३ ॥
आतम रहा वहिरात्मा, जाना अनातम आत्मा ।
परमात्म आतम नहिं लखा, शिक्षा करी तो क्या करी ॥ ४ ॥
गुरुमणिक रंड विषै कहैं, दग सुख विना शिव पद चहैं ।
विन मूल तरु अनफूल फल, इच्छा करी तो क्या करी ॥ ५ ॥

१४६—रागनी धनाश्री ।

सकल जग जीव शिक्षा करयो ॥ टेक ॥ कृतकारित अपराध हमारे-सो सब पर हरियो । तजकर वैर प्रीति की परिणति-समता उर धरयो ॥ १ ॥ या भव जाल सदा फंस हम तुम-बहुते दुख भरियो-हाथ जोड़ अब दोष छिमाऊं आगै मत लड़यो ॥२॥ कीनो हम संवर तुम संवर, सै-कबहुँ न टरियो- नयनानंद पंथ संतन के चल भव जल तरयो ॥ ३ ॥

१४७—खम्माच रागनी झँझोटी ।

हमारी प्रभु नय्या उतार दीजै पार । टेक
अटक रही भव दधि के भँवर में, ऊरध मध्य अधो मँझधार ॥१॥
औघट घाट पड़ो टकरावै, चक्रित हरट घड़ी उनहार ॥२॥
अति व्याकुल आकुल चित साहिब, नाहो इधर नहो उस पार ॥३॥
दल में रुद्ध शशाकी गति ज्यों, जित तित होत मार ही मार ॥४॥
अब चनीथ मम दशा जिनेश्वर, कोई न शरण सहाय अबार ॥५॥
व्याकुल नैन चैन नहिं निश दिन, केवल तुमरो नाम अधार ॥६॥

१४८—भैरवी ।

जिस दिन सें मैंने दरस तोरे पाये,
अनुभव घन वरसाए, दरश तोरे ॥ टेक ॥
भेद विज्ञान जगो घट अन्तर, सुख अंकुर रस रलाए ॥१॥
शीतल चित्त भयो जिंम चन्दन, शिव मारग में धाए ॥२॥
प्रघटो सत्य स्वरूप परापर, मिथ्या भाव नशाए ॥३॥
नयनानन्द भयो अब मन थिर, जग में संत कहाए ॥४॥

१४९—रागनी जंगला-गंगावासी देहाती ।

तुम्हैं त्रिभुवन के जन ध्यावैं, थारे सुन सुन गुण भगवान । टेक ।
अजी अर्ह धातुसे भये हो अर्हन्, बोधलब्धि सें भयेहो भगवन ।
धरो अनन्त दरश सुख वीरज, किस मुख जस गावैं ॥ १ ॥
अजी आप तिरो ओरन को तारो, शुभ शिक्षाकर भरम निवारो ।
तारण तरण निरख सुर नर मुनि, चरण शरण आवैं ॥ २ ॥

अजी पट २ की खटपट तज भविजन, सारभूत जिन चितमें धरमन
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, पुरुषारथ फल पावैं ॥ ३ ॥
अजी शूकरसिंह नवल कपि तारे, भील भुजङ्ग मतंग उवारे।
दग सुख के दग दोप हरो, थारे सेवक कहलावैं ॥ ४ ॥

[१५०]

मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोप धरण हारे, अजी दोष धरन हारे सब टारे, निर्दोषी इक तुम ही निहारे, वीत राग सर्वज्ञ तरण तारण का विरद थारै ॥ टेक ॥
भूख प्यास तुमकूं नहीं दाता, राग द्वेष अरु नाहीं असाता।
जन्म मरण-भय जरा न व्यापै, मद सब निर्वारै ॥ १ ॥
मोह खेद प्रस्वेद न आवे, विसय नींद न चिन्ता पावै।
भजगंई रति अरु अरति कहैं, सुर नर मुनि जन सारे ॥ २ ॥
भूखा देव छिपटता डोलै, प्यासा नित सिर चढ़ चढ़ बोलै।
रागी छीन पराया धन दे, द्वेषी दे मारै ॥ ३ ॥
रोगी रोग सहित दुख पावैं, जन्म धरै सो मर मर जावै।
डर कर बांधे शस्त्र बुढ़ापा, सुध बुध हर डारै ॥ ४ ॥
मद वाला नित मदिरा पीवै, मोह मूर्छित मरा न जीवै।
स्वेद खेद विसय कर व्याकुल, किसको निस्तारै ॥ ५ ॥
सोवै सो परमादी होवै, डूबै अरु सेवग कु डबोवै।
सोवै आतम गुण सुतुम्हारे. गुण कैसे निर्धारै ॥ ६ ॥
चिन्तातुर को चिन्ता सोखै, रति बेहोश अरति सैं होकै।
भूत भवानी कृत मसानी, तजदो सब प्यारे ॥ ७ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश हैं वोही, जिसनें करम कालिमा धोई।
दगानन्द वोही देव हमारा, सेवो सब जन प्यारे ॥ ८ ॥

१५१—रागधानी ।

राखो रुचि बीरा मत रूसो धरम से, राखो रुचि बीरा,
हे रूसो ना धरम सै जिनमत के मरम सैं, राखो ॥ टेक ॥
धर्म प्रभाव तिरोगे भवसागर, पिण्ड छूटैगा तेरा आठोंही करमसैं १
साचेदेव धरम ही को सेवो, याहीसैं तिरोगे न तिरोगे जी भरमसैं २
मान नयनसुख सयानी, भावैं हैं सुगुरु तेरे जिया वेशरम सैं ॥३॥

१५२—रागनी भैरवीं या खम्माच ।

जबसैं चरन की शरण मैं लई प्रभु,
जागी सुमति मोरी भागी कुमति, प्रभु० ॥टेक॥
छूटी अदर्शन अविद्या अनादि, जब सै समाधी धरन मैं लई । १
अनुभव भयो मेरे मन में तुमारो, जबसैं तेरी जप करन में लई । २
साताभई भगाई सब असाता, जो पूर्व जम्मन मरन मैं लई । ३
भजी सर्व चिंता भया सुख अनंतो, द्यानंद संपति भरनसैं लई । ४

१५३—चाल ।

मैं तो शान्ति पाई तृष्णा घटाने से ॥ टेक ॥
रागी मैं पूजे विरागा मैं पूजे, भ्रष्ट भयो बहकाने से ॥ १ ॥
धार कुभेष अनेक भरे दुख, दूर भगो जिन वाने से ॥ २ ॥
मिटी कुदृष्टि सुदृष्टि भई अब, श्री जिन के समझाने से ॥ ३ ॥
बंध मोक्ष का मारग सूझा, स्वपर स्वरूप पिछाने से ॥ ४ ॥
जाने पुण्य पाप दोउ बन्धन, शुद्ध भावना भाने से ॥ ५ ॥
नैनानन्द मिटे सब सुख दुख, सम्यक दर्शन पाने से ॥ ६ ॥

०१५४—रागनी बरवा या धनासरी या पीलू ।

क्या नर देह धरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥ टेक ॥
तोलै ज़ोर गले पर मोसो, बोलै बात जरी, खोसै धन अरु नार
बिरानी पाप की पोट भरी, हे बतादे प्यारे क्यों नर देह धरी ॥१॥
तृष्णा वश न कियो सठ संवर, दुर्गति बांध धरी ।
तिर कर सिन्धु किनारे डूबौ, यह क्या कुबुद्धि करी ॥ २ ॥
यह तो देह तपस्या कारण, काहू पुण्य धरी ।
तैं तप त्याग लाग विषियन में. राखी याहि सड़ी ॥ ३ ॥
बार अनन्त अनन्त जगत में, तैं सब देह वरी ।
क्या न कियो न कियो सो करले, परजा जात मरी ॥ ४ ॥
बहु आरम्भ परिग्रह में फँस, किसकी नाव तरी ।
हग सुख नाम काम अन्धन के, रे सठ खाक परी ॥ ५ ॥

१५५—खम्माच पीलू का दादरा ।

विकलपता सारी टरगई, विकलपता सारी,
हे जिनजी तुमरे ध्यान सैं ॥ टेक ॥
तुमरे सुगुण सुन साधे मैंने निजगुण करम भरम रज झरगई ॥१॥
सिद्ध भये मेरे सकल मनोरथ, शुभ गति पायन परगई ॥ २ ॥
पूजत तुम पद डूबत भवदधि, टूटी नवका तिरगई ॥ ३ ॥
चहुँ गति सैं तिरआन भयोनर, उमर भजन में गिरगई ॥ ४ ॥
तिरत तिरत प्रभु थारे चरनन में, नाव हमारी अब अड़गई ॥५॥
जो न करोगे प्रभु पार हमारी नय्या, तो अब आगे तरलई ॥६॥
नैन चैन प्रभु लोग कहैंगे, ऐसैं बाड़ खेत कूं चरगई ॥ ७ ॥

१५६—राग भैंरूनर ठुमरी ।

थारे दर्शन सूं लौ लगी लगी, थारे अजी लगी लगी लौ
लगी लगी, पर परसन सूं लौ लगी लगी, थारे ॥ टेक ॥
परमारथ की प्राप्ति भई अब, तत्वारथ रुचि पगी पगी ॥ १ ॥
सुन सुन जिन धुन भर्म भग्यो सब, ज्ञान कला उर जगी जगी॥२
आई सुमति सुगति की दायनि, कुमति कुभागन भगी भगी ॥३॥
नयनानन्द भयो मन मेरे, कर्म प्रकृति सब दगी दगी ॥ ४ ॥

१५७—संध्या आरती-चाल जै शिव ओंकारा ।

/ जै श्री जिन देवा—जै जै जिन देवा-पार लगादो खेवा—करूं
चरण सेवा ॥ टेक ॥ वंदूं श्री अरहंत परमगुरु, दया धरम धारी-
प्रभु दया धरमधारी—परमातम पुरुषोत्तम-जग जन हितकारी ॥१॥
प्रभु भव जल पतित उधारण, चरण शरण थारी—प्रभु चरण—
सद्धक्ता निर्लोभी, करम भरमहारी ॥ २ ॥ स्वामी तुम पद सेवत
गज पति, भयो समता धारी—प्रभु भयो तीर्थंकर पद पारसपा,
भयो भवपारी ॥ ३ ॥ आयो पिहिता श्रव मुनि मारन मृग पति
बलधारी-प्रभु मृग पति—भयो वीरतीर्थंकर सुन शिक्षाधारी ॥४॥
स्वामी दोष कुशील धरो सीता प्रति दुर्जन अविचारी प्रभु
दुर्जन—कूद पड़ी अग्नी में लेके शरण थारी ॥ ५ ॥ खिल गए
कँवल अगनी में प्रभु तुम मेटे भय भारी—प्रभु-अच्युतेंद्रपद
दीनो फिरन होय नारी ॥ ६ ॥ वलि ने यज्ञ रचाय दुखी किये
मुनि वर ब्रह्मचारी-विश्नुकुमार मुनीश्वर किये तुम उपगारी ॥७॥
पुष्पहार भए सर्प जिन्होंने तुम सेवा धारी-प्रभु-विदित कथा
सतियन की गावैं नरनारी ॥ ८ ॥ स्वामी वज्र किरण नृप मूरति

तुमरी कर मुद्राधारी-जीत्यो सिंहोदरसैं राम गरद भारी ॥ ९ ॥ स्वामी तिरगये नृप श्रीपाल भुजन तैं महा सिंधुखारी-कुष्ट व्याधिगई छिन मैं तुमही निर्वारी ॥ १० ॥ महा मंडलेश्वर पद्दे तुम कियो जगत पाने-वादिराय मुनिवर की दुर्व्याधि सारी ॥ ११ ॥ मानतुंग मुनिवर के तोड़े राज बंध भारी-चढ़े सुदर्शन शूलीवर्ती मुकतिनारी ॥ १२ ॥ इत्यादिक भगवंत अनंती महिमा तुमधारी-तीनलोक त्रिभुवन मैं विदित कथा थारी ॥१३॥ शेष सुरेश नरेश मुनीश्वर जावैं वलिहारी-पावैं अखै अचलपद टरैं विपतसारी ॥१४॥ कहत नैन सुख आरति तुमरी करत हरख हारी-तारे जीव अनंते अवके वार हमारी ॥१५॥

१५८—आरती।

/ जय जय जिनवानी नमो नमो-त्रिभवन जनमानी नमो नमो गण धरने बखानी नमो नमो-जय जय ॥ टेक ॥ वीत राग हिम गिरतैं उछंरी-गणधर गुरुवों के घट में पसरी-मोह महा चल दमो दमो जय ॥ १ ॥ जग जड़ता तप दूर करो सब-समतारस भरपूर करो अब-ज्ञान विवेकरमोरमो ॥ २ ॥ सप्ततत्व पट द्रव पदारथ-खो दिये तो विन मैं ये अकारथ, अब मेरे उर जमो जमो ॥ ३ ॥ जब लग शिव फल होय न प्रापत, चहुँ गति भ्रमण न होय समापत तबलों यह कृषि थमो थमो ॥ ४ ॥ शूकर सिंह नवल कपितारे, चील भील अरु फील उभारे, त्यों मेरे अघ क्षमो क्षमो ॥ ५ ॥ जै जग ज्योति सरस्वती प्यारी, दग सुख आरति करै तुम्हारी, अरतिहरो सुख समो समो ॥ ६ ॥

१५९—रागनी झंझौटी ।

सारे जीवों की भय्या दया पालोरे, हेदया पालोरे अदया टालोरे-सारे ॥ टेक ॥ भय्या काया न खंडो न जिह्वा विदारो-नासा मैं रस्से मती डालोरे ॥ १ ॥ भय्या आंखें न फोड़ो न त्यौरी चढ़ावो, कैड़े बचन के न घाव घालोरे ॥ २ ॥ भय्या भोजन खिलादो पिलादो जी पानी-रोगी को औषध दे वैठालोरे ॥ ३ ॥ ज्ञानी वनादो अज्ञानी को बीरन, करके अभय सब के भय टालोरे ॥ ४ ॥ भय्या पालोगे अज्ञा तो होगे नयन सुख सुनलो जिनेश्वर के मतवालोरे ॥ ५ ॥

(१६०)

अब तो चेतो पियरवा चेतन चतुरप्यारे, मेटो अनादी ये भूल ॥ टेक ॥ हाथों सुमरनी कतरनी वगल मैं, ये तो कुमतिया ऐसी वनाई जैसी होवे रजाई मैं शूल, पियारे प्यारे जैसी होवे रजाई मैं शूल, अब तो-चेतो पियरवा चेतन ॥ १ ॥ धारो दया पर पीड़ा बिसारो, वोलो बचन सतवादी, रहोजी डारो चोरी के माथे मैं धूल ॥ २ ॥ मतना करो परनारी की वांछा लघुदीरघ सारी ऐसी गिनो जी जैसी माता वहन समतूल ॥ ३ ॥ त्यागो परिग्रह की तृश्ना नयन सुख, भाषै सुमति मतराखै कुमति भाई वोवो न काटे ववूल ।

(१६१)

जनम मतखोवै-जनम मत खोवै अरे मतवारे ॥ टेक ॥
मत खोवै तू धरम रतन को, मत भवसिंधु डबोवै—१

कंचन भांजन धूर भरै मतरे, गज सज खात न ढोवै—२
मत चढ़ चक्र बरत हो खरपै अमृत से ना पग धोवै—३
मत चाटे असि सहत लपेटी, मत शूली चढ़ सोवै—४
मत मधुविंदु विषय के किारण, मग में कांटे बोवै—५
श्री अरहंत पंथ में परले, ज्यों नयनानंद होवै—६

(१६२)

ले लेरे सरन सेले श्री भगवान ॥ टेक ॥ खेलरेतैं खेल घनेरे-पेलेरे पलान, सेले बांधे भेले कीये, पाप के सामान ॥ १ ॥ छोली रे तैं छाती ले ले जीवन के प्राण, खोसेरेतैं परधन मोसे कंठ वेई-मान ॥ २ ॥ ढेलेरे अनारी अपने हाथों से तू दान, जावोगे अकेले कागाखावैंगे मसान ॥ ३ ॥ पलेरे तू हग सुखदाई शिक्षा बुद्धिवान धेले को न लेगा कोई, काया ये निदान ॥ ४ ॥

१६३ राग जंगला झंझौटी ।

अरे मन मान मेरा कही, तज पाप चेत सही, संसार में तेरो कौन है क्यों मूढ़ पक्ष गही ॥ टेक ॥ है परमब्रह्म तुही सर्वज्ञ ज्ञान मई, सम्यक विन भया भ्रष्ट, तू चिरकाल विपति सही ॥१॥ स्वर्गादि विभव भई, तृष्णा तऊ न गई, तौ ओस सम नर भोगतैं यह रोग जाय नहीं ॥ २ ॥ किन सीख तोहि दई, कर वमन फेर चही-मत खाय चतुप सुजान यह बहुवार भोगलई ॥ ३ ॥ है समझमीत यही, तज भोग राख रही, कहै नैनसुख रहु विमुख इनसे, सीख सुगुरु की कही ॥ ४ ॥

१६४—राग समंदर खम्माच की धुन ।

तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे, लागी मतना डबोत्रो जी ॥ टेक ॥ हर कर्म भर्म धर परम धरम मिथ्यातकरम से हाथ उठा, चिरकाल जगत में दुःख भरे जिस भांति बने ले पिंड छुटा, भा भाव अनित्य अशर्ण सदा संसार हरट सा चलता है एकत्व दशा समझो अपनी वह तत्व क्यों नहिं टलता है तुम अशुचि अंग के संग शुद्धता अपनी ना खोवोजी ॥ १ ॥ दे आश्रव वाट में संवर डाट प्रकाश महा वलकर्म खिपा, ये पुरुषा कार है कारागार तू कैद पड़ा है बाद लफा, है दुर्लभबोध ले सोध ज़रा जिन धर्म की प्रापति दुर्लभ है, ले तत्व अतत्व विचार हृदै इस वक्त तुझै सब सुर्लभ है, तैं पाई नर पर जाय अगामी मत कांटे वोवो जी ॥ २ ॥ ये भोग भुजंग भयानक हैं क्रोधादि अगन ह्यां जलती हैं, तुम जलते हो न सिंभलते हो ऐ यार बड़ी यह गलती है, जो इनको त्याग वसैं बन मैं वे मुक्ति बरांगन वरतैं हैं निर्वाण अचल सुख पाते हैं, वे जन्म मरण, दुखहरते हैं, तू धरले सम्यक् दृष्टि नैन सुख जिन हित जोवोजी ॥ ३ ॥

स्वतन्त्र मुद्रणालय, मुज़फ़्फ़रनगर।